

मार्च 2021

दादावाणी

Retail Price ₹ 15



जहाँ जागृति है, उतना ही आत्मा के नज़दीक पहुँचा।
जितने नज़दीक पहुँचे उतना ही उजाला अधिक,
उतना ही प्रकाश अधिक।

आप्तवाणी 14 भाग-2 पारायण : 26 दिसम्बर से 3 जनवरी



परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि के अवसर पर विशेष महोत्सव : 2 जनवरी 2021



विवाहित भाईयों व बहनों के लिए विशेष शिविर



वर्ष : 16 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 185
मार्च 2021
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2021

Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset

B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदि, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउन्ड

वार्षिक

भारत : 150 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'स्व-पर' के संधिस्थान पर जागृति के पुरुषार्थ सूत्र

संपादकीय

स्थूल में से सूक्ष्म की तरफ ले जाए, दादाश्री के परमार्थ आप्तवचन;
नहीं है सिर्फ पढ़ने के लिए, आवश्यक गहरा परम अर्थघटन!

ज्ञानी देते हैं सारांश का भी सार, ऐसे अद्भुत हैं ज्ञान वाक्य,
निरंतर बरतते स्वभान-लक्ष-जागृति, अनुपम जागृतिदर्शक सूत्र!

'जागृति' का एक ही शब्द पचे तो बढ़े कदम मोक्ष की तरफ,
ज्ञानी पुरुष की जागृति की झलक, झुकाए शीश ज्ञानी चरण!

परम पूज्य दादा भगवान(दादाश्री) की कृपा से ज्ञानविधि के भेद विज्ञान के प्रयोग में जब सूक्ष्मतरंग अहंकार फ्रेक्चर होता है, तब 'मैं चंदू हूँ', वह रोंग बिलीफ फ्रेक्चर हो जाती है और राइट बिलीफ, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसी प्रतीति में हो जाती है और फिर 'खुद' जाग्रत आत्मारूपी बन जाता है और वही खुद का शुद्धात्मा पद है! प्रज्ञा भी, राइट बिलीफ होते ही ज्ञान से उत्पन्न होने वाली शक्ति है। प्रज्ञा ही मूल जागृति है। कम-ज्यादा होती हुई दिखाई देती है इसलिए उसे जागृति कहते हैं। प्रज्ञा 'फुल' तो संपूर्ण जागृति।

प्रस्तुत अंक में 'जागृति' शब्द को सूक्ष्मता से समझाने का नम्र प्रयास हुआ है। दादाश्री सरल भाषा में कहते हैं कि जागृति अर्थात् 'सोए नहीं' से लेकर आखिर में 'दीया नहीं बुझे' तब तक। जागृति का गहराई से अनुभव करने के लिए दादाश्री अलग-अलग शब्द प्रयोग बताते हैं जैसे कि बातचीत के प्रयोग द्वारा चंदू से अलग होने का प्रयोग, चंदू को अलग देखना-जानना, उपयोग, शुद्ध उपयोग, उपयोग पर उपयोग, दृश्य-द्रष्टा, ज्ञेय-ज्ञाता, ज्ञाता-द्रष्टा। 'जागृति' शब्द से जुड़े हुए ये सूत्र पुरुषार्थी महात्माओं को प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ाएँगे। जैसे-जैसे जागृति की सूक्ष्मता आती जाएगी, वैसे-वैसे सभी आवरण टूटेंगे उसके बाद आत्मा का स्वसंवेदन होगा। पहले स्वसंवेदन होगा और फिर बढ़ते-बढ़ते स्पष्टवेदन हो जाएगा! ज्ञान मिलने के बाद जागृति की शुरुआत हो जाती है। संपूर्ण जागृति अर्थात् केवल स्वरूप रमणता ही, वही केवलज्ञान है, वही खुद परमात्मा है! पाँच आज्ञा के पुरुषार्थ से जागृति बढ़ते-बढ़ते फुल हो जाए तो वह केवलज्ञान है!

'शुद्धात्मा', वह पहला स्टेशन है, वस्तु स्वरूप का सब से पहला, 'उपनगर' है। फिर ऐसे कितने ही 'उपनगर' आएँगे, जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता जाएगा वैसे-वैसे बाद के 'उपनगर' आते जाएँगे। उसके बाद मूल सेन्ट्रल स्टेशन अर्थात् परमात्मा का स्टेशन आएगा। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता जाएगा वैसे-वैसे इस जन्म में प्रत्यक्ष ज्ञानी की निश्रा में महात्माओं की अंश जागृति की शुरुआत होने के बाद फिर संपूर्ण जागृति तक पहुँचकर, खुद खुद के स्वसंवेदन व स्पष्टवेदन तक पहुँचने का पुरुषार्थ शुरू करें, उसके लिए इन जागृतिदर्शक सूत्रों को समझकर इनका चिंतन हो, यही हार्दिक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

‘स्व-पर’ के संधिस्थान पर जागृति के पुरुषार्थ सूत्र

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

(सूत्र-1)

सांसारिक हिताहित का भान हो जाए अर्थात् सर्व प्रकार के सांसारिक हित का भान और संसार के सर्व प्रकार के अहित का भान हो जाए, तब संपूर्ण सांसारिक जागृति आती है। संपूर्ण सांसारिक जागृति होने के बाद आत्मा के हिताहित की जागृति उत्पन्न होती है।

प्रश्नकर्ता : जागृति क्या है ?

दादाश्री : सोए नहीं, वह। सारा संसार खुली आँखों से सो रहा है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जो खुली आँखों से नहीं सो रहा हो। प्रेसिडेन्ट, ऑफिसर्स, प्रधान सभी खुली आँखों से सो रहे हैं। यदि जागृति आ जाए तो ‘चंदूभाई’ क्या कर रहे हैं, ऐसा सब ‘जानता है।’ शाम को विस्तारपूर्वक लिखकर ले भी आता है। लोगों को ऐसी जागृति हैं क्या? जहाँ हिताहित का भान हो, उसी को जागृति कहते हैं। हिताहित का भान मनुष्यों को हैं ही कहाँ?

आपको खुलासा हुआ, थोड़ा-बहुत? ‘चंदूभाई’ क्या कर रहे हैं, वह दिखाई नहीं देता ‘आपको?’

प्रश्नकर्ता : दिखाई देता है।

दादाश्री : और ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, ऐसा ध्यान कितने समय तक रहता है?

प्रश्नकर्ता : निरंतर।

दादाश्री : शुद्धात्मा बन गए। यह निरंतर प्रतीति कहलाती है!

प्रश्नकर्ता : दादा मिल चुके हों, दादा का ज्ञान मिल चुका हो तभी ऐसी जागृति उत्पन्न होती है न?

दादाश्री : उसकी तो बात ही अलग है। यों तो जागृति रहनी मुश्किल है। क्योंकि इस काल में जागृति नहीं रहती। शायद ही कोई, अपवाद रूप से किसी को रहती होगी! वह जन्मजात होती है! जन्मजात जागृति लेकर आया होता है। मेरे ज्ञान देने के बाद जो जागृति शुरू हो जाती है, वह फिर जाती नहीं। कितना आश्चर्य है कि फिर जागृति जाती ही नहीं! निरंतर जागृति रहती है!

(सूत्र-2)

आत्मा प्राप्त हुआ उसकी निशानी क्या है? तब कहते हैं, जागृति, निरंतर जागृति। जागृति से ‘अनुभव’ होगा और जागृति से ही ‘केवलज्ञान’ होगा।

प्रश्नकर्ता : जागृति तो आत्मा का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ही है न?

दादाश्री : नहीं! लक्ष्य तो मिल चुका है। जागृति अर्थात् इन पाँच वाक्यों (आज्ञा) द्वारा तुरंत ही जाग्रत हो जाए, यानी कि ज्ञान हाज़िर हो जाए। जिसे हर एक बात में ज्ञान हाज़िर हो जाता है, वही जागृति कहलाती है। हर बार, जब

आप पद गा रहे हों, उस पद का एक-एक शब्द दिखाई दे, तब जानना कि यह जागृति है। यह जो हम बुलवाते हैं, सीमंधर स्वामी को नमस्कार, उस क्षण हमारी जागृति उसी अनुसार करती है। उस जागृति को बढ़ाना है। ऐसे करते-करते बढ़ती जाएगी। थोड़ी आज बढ़ेगी, थोड़ी कल बढ़ेगी। ऐसे करते-करते संपूर्ण जागृति बढ़ जाएगी। जागृति ही लानी है। जागृति बढ़नी चाहिए। केवलज्ञान अर्थात् संपूर्ण जागृति, एक अंश भी अजागृति नहीं।

प्रश्नकर्ता : अनुभव में जो है क्या वह जागृति में आता है? जागृति ही अनुभव है न?

दादाश्री : नहीं, जागृति वह चीज़ है जिससे कि हमें अन्य अनुभव होते हैं। एक तरफ लिखें कि पहले चंदूभाई थे, वे कैसे थे और अभी चंदूभाई कैसे हैं? ऐसा किस कारण से है? तब कहते हैं कि इस ज्ञान के प्रताप से, जागृति के प्रताप से आत्मा के तरफ की यह दिशा जाग्रत हो गई है, राइट दिशा में। पहले रोंग दिशा में थे, वहाँ से पूरा ही चेन्ज हो जाता है, हंड्रेड परसेन्ट चेन्ज लगता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अर्थात् चेन्ज होता है, वह ठीक है। लेकिन चेन्ज कब होता है? जागृति आने के बाद चेन्ज होता है न?

दादाश्री : यह ज्ञान देने के बाद उसे जागृति आ ही जाती है।

(सूत्र-3)

सर्वोच्च समाधि कौन-सी है? संपूर्णतः जाग्रत। संपूर्ण जागृति कब रहती है? जब अहंकार का विलय हो जाता है, तब। कभी भी जब दुःख होता है तो वह इसलिए कि संपूर्ण रूप से जागृति नहीं है।

इस ज्ञान का अर्थ क्या है? जागृति। शुद्धात्मा

वह अन्य कोई चीज़ नहीं है, जागृति ही है। अब, जो जागृति बढ़ेगी, वह जागृति अंदर हमें दुःखी नहीं होने देगी। अंदर हमारा अहंकार खड़ा नहीं होने देगी, इस प्रकार कुछ भी नहीं होने देगी; फिर और क्या चाहिए? फिर तो चंदूभाई का यह नाटक देखना है, ड्रामा देखना है।

जागृति किसे कहेंगे? खुद अपने आप से कभी भी, किसी भी संयोग में क्लेशित नहीं हो तभी से जागृति की शुरुआत होती है फिर दूसरे 'स्टेपिंग' में, दूसरों से भी खुद क्लेशित नहीं हो, वहाँ से लेकर ठेठ सहज समाधि तक जागृति रहती है। अगर जाग चुके हैं तो जागने का फल मिलना चाहिए। यदि क्लेश हो, तो कैसे कह सकते हैं कि जाग गए हैं? किसी को ज़रा सा भी दुःख दें, तो वह जाग्रत कैसे कहलाएगा? क्लेश रहित भूमिका बनाना, वह उच्च प्रकार का पुरुषार्थ कहलाता है।

(सूत्र-4)

जब तक पूर्ण जागृति नहीं हो जाती, तब तक कोई खुद अपने सभी दोष नहीं देख सकता, तब तक निर्दोष नहीं हो सकता। अंतिम प्रकार की जागृति कौन-सी है कि इस जगत् में कोई दोषित ही नहीं दिखाई दे!

मुझे जगत् निर्दोष दिखता है। हम किसी का दोष नहीं निकालते, पर नोंध (नोट) करते हैं कि, देखो! यह दुनिया क्या है! मैंने इस दुनिया को हर तरह से देखा है, बहुत तरह से देखा है। अभी भी अगर कोई दोषित दिखता है तो वह अपनी भूल है। कभी न कभी तो निर्दोष देखना पड़ेगा न? 'अपने हिसाब की वजह से ही है यह सब,' संक्षेप में इतना समझ जाओगे न, तो भी सब बहुत काम आएगा।

जाग्रत हुए है इसलिए सब पता चलता है कि यहाँ भूल होती है, इस तरह से भूल होती है। वर्ना, खुद को खुद की एक भी भूल नहीं दिखाई दे। जो दो-चार बड़ी भूलें होती हैं न, वे दिखती हैं।

खुद की भूल दिखे ही नहीं, फिर मनुष्य भूलों को खुराक ही देगा न!

जब संपूर्ण जागृति बरते, तब खुद से एक भी भूल नहीं होती! एक भी भूल होना, वह अजागृति है। दोष खाली किए बिना निर्दोष नहीं हुआ जा सकता! और निर्दोष हुए बिना मुक्ति नहीं है।

जागृति से खुद के सभी दोष दिखाई देते हैं। जगत् जाग्रत है ही नहीं और खुली आँखों से निद्रा में घूम रहा है। सामने वाले के दोष निकालने को जागृति नहीं कहते। ऐसा तो अज्ञानी में बहुत रहता है। सामने वाले में बिल्कुल भी दोष नहीं दिखाई देने चाहिए। खुद के दोष देखने से फुरसत ही नहीं मिले, वही जागृति कहलाती है।

खुद का दोष दिखे तब समझना कि जाग्रत हुआ है, वर्ना नींद में ही चलते हैं सभी। दोष खत्म हुए या नहीं हुए, उसकी बहुत चिंता करने जैसी नहीं है, पर जागृति की मुख्य रूप से जरूरत है। जागृति होने के बाद नये दोष उत्पन्न नहीं होते और पुराने दोष हों तो वे निकलते रहते हैं। आप उन दोषों को देखो कि किस-किस तरह के दोष होते हैं।

खुद के दोष दिखें, तब समझना कि मोक्ष में जाने की तैयारी हुई। जागृति के बिना किसी को खुद के दोष नहीं दिखते। सामने वाले के दोष निकालने हों तो दो सौ-पाँच सौ निकाल देता है! यदि हमारे दोष किसी को नुकसान कर रहे हों तो 'हमें' 'चंदूभाई' से कहना चाहिए कि,

'प्रतिक्रमण करो।' किसी को किंचित्मात्र दुःख देकर कोई मोक्ष में नहीं गया है। रोज आम का रस और पूरियाँ खाता होगा तो उसमें हर्ज नहीं, पर यह दुःख देकर मोक्ष में जाए, वह होता नहीं। यहाँ पर 'क्या खाते हैं, क्या पीते हैं', उसकी वहाँ कीमत नहीं है। पर वहाँ तो कषायों का ही हर्ज है और अजागृति नहीं रहनी चाहिए। जगत् को सोता हुआ क्यों कहा जाता है? क्योंकि 'स्व-पर' का भान नहीं है, खुद का, स्व का और पर का, हिताहित का भान नहीं रहा।

(सूत्र-5)

जागृति तो किसे कहते हैं? विचार आने से पहले ही समझ में आ जाए कि यह तो ज्ञेय है, और 'मैं' ज्ञाता हूँ!

प्रश्नकर्ता : दादा ने तो कहा है न, "रात को 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते हुए और निदिध्यासन करते हुए सो जाना तो पूरी रात वह नल चलता रहेगा", तो वह कौन सी जागृति है?

दादाश्री : वह ध्यान कहलाता है। ध्यान में रहे तो भी अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : उससे आगे की स्टेज अर्थात् आप जो कहते हैं, वही जागृति है न?

दादाश्री : दीया बुझे नहीं। फिर से जलाना नहीं पड़े। मन क्या बताता है, उसके ज्ञाता-द्रष्टा रह सकें वहाँ तक जागृति ले जाना है। उसके बाद उसे नहीं ले जाना पड़ेगा! यानी कि जागृति किसे कहते हैं? विचार आने से पहले ही समझ में आ जाए, कि 'यह तो ज्ञेय है और मैं ज्ञाता हूँ।'

प्रश्नकर्ता : दादा, जागृति किसे कहेंगे? उदाहरण के तौर पर क्रोध आ जाए या चिढ़ जाए तो वह प्रकृति की बात हुई। उसी क्षण 'मुझे'

ध्यान आ जाता है कि 'चंदूभाई' ने क्रोध किया, वही जागृति कहलाती है न!

दादाश्री : वही जागृति है। 'आप' समझ गए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन यदि उसमें देर हो जाए तो जागृति उतनी कम है?

दादाश्री : देर लगी अर्थात् कर्म का उदय गाढ़ है, इसीलिए देर लगी। किसी ने थूका, वह अगर हल्का हो न, तो तुरंत ही धो देते हैं और अगर गाढ़ हो तो देर लगती है। कर्म जितना गाढ़ उतनी ही देर से जागृति। यदि गाढ़ नहीं हो न, तो कुछ भी नहीं होगा। भले ही देर से आए लेकिन जागृति तो है न! जाग्रत है न! जाग्रत इंसान बोलता है कि 'अबे! कौन है?' तो चोर चले जाते हैं, लेकिन जहाँ बोले ही नहीं, वहाँ तो सबकुछ ले ही जाएँगे न!

यदि खुद का दोष समझ में नहीं आए और औरों के ही दोष हैं ऐसा लगे तो वह अज्ञानी की निशानी है। वह निरंतर बंधन में आता रहता है और उसके लिए मार खाता रहता है। जबकि ज्ञानी की निशानी क्या है? ज्ञानी की कृपा किसने प्राप्त कर ली? जिसे तुरंत ही खुद के दोष दिखाई दें, ऐसी जागृति है और जिसे निरंतर यही भाव रहे कि इनसे किस प्रकार से छूटूँ।

जाग्रत व्यक्ति तो ग़ज़ब का होता है! मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, अंतःकरण के चारों भाग के हर एक कार्य के समय हाज़िर रहे, उसे जागृति कहते हैं!

वीतरागता तक की जागृति रहती है। जागृति मन को कहीं चिपकने ही नहीं देती, बुद्धि को नहीं चिपकने देती, किसी को भी कहीं चिपकने ही नहीं देती जबकि अजागृति से चिपक जाता है।

(सूत्र-6)

मशीनरी का स्वभाव ही ऐसा है कि वह उपयोग रहने ही नहीं देती। क्योंकि शुरुआत जड़ भक्ति से हुई न! जबकि चेतन की भक्ति अर्थात् चेतन प्राप्त होने के बाद ही चेतन की भक्ति होती है। भक्ति से आवरण टूट जाते हैं और ज़्यादा दिखाई देता है। खुद 'किसकी भक्ति कर रहा है' उस पर आधारित है। जिसने चेतन प्राप्त किया है, ऐसे पुरुष की, 'ज्ञानी पुरुष' की भक्ति करने से चेतन प्राप्त होता है।

प्रश्नकर्ता : अब, यह जो जागृति है, वह जागृति व्यवहार में पूरी ही आवृत हो जाती है। कोई ऐसा अवसर आ जाए उस वक्त, जिसे तन्मयाकार परिणाम कहते हैं न, वैसा हो जाता है।

दादाश्री : मशीन का काम करने में तो आत्मा चला ही जाता है। क्योंकि उसे मशीनरी की भक्ति कहा जाएगा। मशीनरी हमेशा भक्ति माँगती है, तन्मयाकार भक्ति। वर्ना मशीनरी का एक नट भी फिट नहीं हो सकता।

जब मशीनरी रिपेयर करने जाना पड़े, तब तुझे मशीनरी के पार्ट्स याद आते हैं, उसी का सब याद आता है। तब भीतर जो उपयोग चल रहा होता है, उसमें से वह दूसरी जगह पर चला जाता है। तब वह (आत्मा का) सारा उपयोग बिगड़ जाता है।

इसलिए बचपन से ही हम मशीनरी को छूते भी नहीं थे। साइकिल में पंक्चर हो जाता तो उसे भी मैं बाहर से ठीक करवा लेता था। यदि मेरा ध्यान उसमें जाता तो मेरा सबकुछ बिगड़ जाता। नट भी नहीं घुमाता था। ऐसा कह देता था, कि 'मुझे आता ही नहीं है।' जैसे देकर करवा लेते थे हम। एक तरफ मशीनरी रिपेयर

करता है, उस समय एक घंटा क्या होता है? आत्मा फिर उसी में रहता है न, नहीं? क्योंकि उसे भक्ति कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : मेरा कैसा रहता है कि पूरे समय आपकी ही सेवा में रहती हूँ इसलिए आत्मा याद ही नहीं आता, आज्ञा याद ही नहीं आती।

दादाश्री : आपको याद न रहे तो उसमें कोई दिक्कत नहीं है। दादाजी की यह सेवा तो, यह तो ग़ज़ब की चीज़ कही जाती है। उसे आत्मा याद रखने की ज़रूरत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उस समय फिर दादा ही याद रहते हैं।

दादाश्री : लेकिन भक्ति किसकी होती है, वह देखने की ज़रूरत है। आत्मा याद रहे या न रहे, उसका तो मैंने लक्ष (जागृति) दिया है, इसलिए आपको कभी न कभी लक्ष आएगा ही, लेकिन यह देखना है कि भक्ति किसकी है। जिनकी भक्ति करोगे न, उन्हीं जैसे बनते जाओगे।

प्रश्नकर्ता : तब तो बहुत ही उच्च प्रकार का है, दादा।

दादाश्री : हाँ, बहुत उच्च प्रकार का है इसीलिए तो कहता हूँ न, इन सभी से कि 'भाई, आपको यह बहुत उच्च प्रकार का मिल गया है, आपके पुण्य जागे हैं।' शायद ही किसी के पुण्य जागते हैं न? मैं ऐसा इंसान नहीं हूँ कि किसी को सेवा दूँ। मैं इतना कच्चा इंसान नहीं हूँ कि सेवा दूँ। बिल्कुल भी नहीं। यह पैर टूट गया न इसलिए इन नीरू बहन को सेवा देनी पड़ी। वर्ना मैं तो देता ही नहीं। मैंने ज़िंदगी में किसी की भी सेवा ली ही नहीं।

और तू तो मशीन की भक्ति करता है।

जिसकी भक्ति करते हैं उसी जैसे बन जाते हैं। श्रुतज्ञान की भक्ति से एकदम जागृति आई और प्रकाश हो गया। इस मशीन की भक्ति से प्रकाश वापस बंद हो जाएगा। यह देखना है कि भक्ति किसकी कर रहा है। आत्मा का स्वभाव है कि जिसकी भक्ति करता है न, वैसा ही बन जाता है। इसीलिए कहता हूँ न कि, 'नीरू बहन के बहुत ही ज़्यादा पुण्य जागे हैं।' लोगों से ऐसा कहता हूँ वह क्यों कहता हूँ? वर्ना कहता ही नहीं न, लोगों से!

प्रश्नकर्ता : दादा, आज मुझे भी ऐसा लगा कि वह पुण्य बहुत ज़्यादा हैं!

दादाश्री : तुझे ऐसा समझ में आता है न, कि जोखिम किसमें हैं और किसमें नहीं? किसकी भक्ति की थी उससे यह प्रकाश हो गया? आत्मा जैसा चिंतन करता है वैसा ही बन जाता है। आत्मा का मूल लक्षण यह है कि, वह जैसा चिंतन करता है, जिसकी भक्ति करता है वैसा ही बन जाता है। इसीलिए सभी से कहता हूँ न, कि ज्ञानी के पास पड़े रहना।

देखा, श्रुतज्ञान का कैसा फल मिला है?

प्रश्नकर्ता : बहुत सुंदर!

दादाश्री : अंदर साफ है, अन्य कोई इच्छाएँ बहुत नहीं हैं और श्रुतज्ञान आ मिला।

प्रश्नकर्ता : वही तो मुख्य कारण है न, दादा। सारे संयोग मिल गए।

दादाश्री : लेकिन व्यवहार जटिल है न! वह मिकेनिकली हो रहा था तभी से समझ गया था कि इसका व्यवहार अच्छा नहीं कहा जाएगा। खुश भी होता है कि मैंने कितनी अच्छी तरह से मशीन फिट कर दी! अर्थात् अंदर छिपा कर्ताभाव

रहता है। मशीन फिट करने के बाद इंसान खुश नहीं होता ?

प्रश्नकर्ता : होता है न, दादा।

दादाश्री : यदि वह नहीं चलती तो फिर से निराश हो जाता है। इस प्रकार से अभी भी गर्वरस है न। यानी कि ये सारी सूक्ष्म बातें इसके लक्ष (जागृति) में नहीं आती। उसके लिए तो दिन-रात सत्संग में पड़े रहे तब काम चलेगा। अक्रम ज्ञान अर्थात् इसका आराधन सही तरीके से होना चाहिए। फिर भी उसकी यह जो स्वरूप जागृति है, उस हिसाब से तो उसे उपयोग कहा जाएगा। हम उसे उपयोग कहते हैं। अब, यह जो मशीनरी का काम आया है इस काम के साथ ही यदि उपयोग रहे तो वह काम ही निकाल देगा।

(सूत्र-7)

आत्मा की शक्ति ऐसी है कि हर समय कैसे बरतना, उसके सारे उपाय बता देती है और फिर वे कभी विस्मृत नहीं होते। आत्मा की शक्ति तो अनंत है। जितनी तरफ वह शक्ति को घुमानी हो, उतनी तरफ घूम सकती है! उसे घुमाने वाला चाहिए। करोड़ों तरफ घुमाई जा सकती है!

प्रश्नकर्ता : जब इस प्रकार कुछ आत्मा की और विज्ञान की बात निकलती है तब एकदम से भीतर, 'यह गजब की बात निकली!' ऐसा होता है। बाकी, अन्य बातों में तो इस प्रकार कुछ उछल-कूद, भीतर कुछ इस प्रकार का उल्लास उत्पन्न नहीं होता। यों आनंद होता है लेकिन जिसे यों जागृति कहें अथवा उस समय जो दर्शन उत्पन्न हुआ कहें, यह जागृति बढ़ते-बढ़ते कुछ लिमिट

तक आए तो यहाँ तक आकर रुक जाती है। आत्मा से संबंधित इतना कुछ, दादा की कृपा से समझ में आ गया लेकिन यों व्यवहार में अन्य प्रकार के जो रेवॉल्यूशन (समझ) खुलने चाहिए, वे नहीं खुलते।

दादाश्री : तुझे व्यवहारिक ज्यादा कुछ नहीं है न! लेकिन अभी तो वह शक्ति उत्पन्न होगी। आत्मवीर्य है ही नहीं न! आत्मवीर्य प्रकट नहीं हो रहा है। ऐसा है न, तेरे मन में व्यवहार सहन करने की इतनी सी भी शक्ति नहीं है, इसलिए भागता है, भागकर एकांत में चले जाने की कोशिश करता है। लेकिन यह दर्शन प्रकट हुआ, इसलिए तुझे 'खुद की' गुफा में घुसना आ गया, वर्ना परेशानी हो जाती!

प्रश्नकर्ता : आपने जो बताया कि आत्मवीर्य प्रकट नहीं हुआ है। तो आत्मवीर्य कैसे प्रकट होता है ?

दादाश्री : आत्मवीर्य प्रकट हो जाए, तो उसकी तो बात ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : वह क्या कहलाता है ? जब आत्मवीर्य प्रकट होता है तो उसमें क्या होता है ?

दादाश्री : आत्मा की शक्ति बहुत बढ़ जाती है।

प्रश्नकर्ता : तो यह जो दर्शन है, जागृति है। इसके और आत्मवीर्य के बीच क्या कनेक्शन है ?

दादाश्री : जागृति, वह आत्मवीर्य में से आती है। आत्मवीर्य का अभाव है इसलिए व्यवहार का सॉल्यूशन नहीं कर पाता, परंतु व्यवहार को धकेलकर एक तरफ रख देता है। आत्मवीर्य वाला तो कहेगा, चाहे कोई भी हो, आओ न! उसे

उलझन नहीं होती। लेकिन अब वे सभी शक्तियाँ उत्पन्न होंगी!

प्रश्नकर्ता : वे शक्तियाँ ब्रह्मचर्य से उत्पन्न होती हैं?

दादाश्री : हाँ, ब्रह्मचर्य का अच्छी तरह से पालन हो, तब और ज़रा सा भी लीकेज नहीं होना चाहिए। यह तो क्या हुआ है कि व्यवहार सीखे नहीं और यों ही यह सब हाथ में आ गया है!

(सूत्र-8)

‘देखना’ व ‘जानना’, वे दोनों चेतन के गुण हैं और ‘करना’, वे पुद्गल के गुण हैं। जो करता है, वह जानता नहीं है और जो जानता है, वह करता नहीं है। कर्ताभाव और द्रष्टा भाव दोनों अलग हैं। आत्मा का अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं है। ज्ञाता-द्रष्टा ही उसका पुरुषार्थ है और उसका परिणाम है परमानंद।

प्रश्नकर्ता : सत्संग में आप बार-बार यह जुदा रखने के प्रयोग के बारे में बताते ही रहते हैं।

दादाश्री : मुख्य चीज़ वही है न!

प्रश्नकर्ता : यदि मन कुछ बताए, तो मन से कह देना है कि तेरा नहीं चलेगा। यानी कि मन के साथ बात करते ही वह अलग हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, अलग हो ही जाता है और इस देह को ‘फाइल नं वन’ कहने से भी अलग हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : यह जो आपका जुदापन का प्रयोग है, वह किस तरह से होता है? क्या आपको वह आसानी से एक्ज़ेक्ट (यथार्थ) अलग दिखाई देता है?

दादाश्री : वह तो दिखाई देता है। यह पुद्गल भाग और यह चेतन भाग। इस प्रकार से पूरा पहचान जाते हैं। ऐसी जागृति रहती है। जिस प्रकार यदि लौकी की सब्जी बनानी हो तो जागृति रहती है न, कि छिलके अलग निकाल देने हैं, डंठल अलग निकाल देना है। फिर काट लेते हैं फटाफट! उसी तरह से हम में जड़ व चेतन अलग ही रहते हैं।

ज्ञाता-द्रष्टा रहने का मतलब क्या है कि ‘चंदूभाई क्या कर रहे हैं’, उसे आप जानो।

आप शुद्धात्मा हो और ये हैं चंदूभाई। आप दो हो गए। एक से दो हो गए। अब आपको चंदूभाई की देख-रेख करनी है, पड़ोसी की तरह और चंदूभाई को यदि कोई परेशानी आ जाए तो आप चंदूभाई का कंधा थपथपा देना, ‘हम हैं न आपके साथ।’ पहले अकेले थे, निराधार थे। अब आधार वाले हुए।

प्रश्नकर्ता : अब अगर कोई बुलाए तो फिर बात करें या नहीं?

दादाश्री : वह तो करना है। व्यवहार से सबकुछ करना है, आपको जानते रहना है। आपको कहना है, ‘चंदूभाई, इन भाई से ज़रा बात करो अब, बातचीत करो न कुछ!’ तब वे बोलेंगे भी सही और व्यवहार चलता रहेगा। आपको ‘देखते’ रहना है। सामने वाले को पता भी नहीं चलेगा कि आप क्या कर रहे हैं! लेकिन आपको उसे ‘देखते’ रहना है कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं! ज्ञाता-द्रष्टा! दोनों के स्वभाव अलग हो गए। अब आत्मा, आत्मा के स्वभाव में रहेगा और पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है), पुद्गल के स्वभाव में रहेगा। दोनों अपने-अपने गुणधर्मों में रहते हैं।

(सूत्र-9)

दर्पण में चेहरा देखोगे न, तब चंदूभाई दिखाई देंगे। फिर हम ऐसा भी कह सकते हैं कि, 'चंदूभाई, आप तो बहुत अच्छे हो। बहुत समझदार दिखाई देते हो!' हम ऐसा सब कह सकते हैं। हम उससे बातें करेंगे तब फिर ऐसा अनुभव होगा कि सौ प्रतिशत जुदापन है।

प्रश्नकर्ता : आपने बहुत सालों पहले कहा था कि, 'खुद से बातचीत करना। शक्ति बहुत बढ़ जाएगी।' अतः यह बातचीत का प्रयोग बहुत ही उच्चतम चीज़ है। अगर अपने अक्रम विज्ञान के बारे में कहें न, तो इतना, यह जुदा रखने की प्रक्रिया पूरे आधार जैसी चीज़ है।

दादाश्री : हम कहें कि, 'ज्यादा चाय पीना तेरे लिए अच्छा नहीं है।' तब यदि वह कहे कि, 'नहीं! पीनी है।' 'तो फिर पियो।' बातचीत करके जुदापन का लाभ ले लेना है हमें।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। और इस तरह की बातचीत से बाहर की निर्जरा (आत्मप्रदेश में से कर्मों का अलग होना) तो अपने आप होगी ही। यों उपयोगपूर्वक कहलाएगा न सारा? यों बाहर पूरा बीमारी का असर हो, वीकनेस हो फिर भी अंदर तो बातचीत चलती ही रहेगी।

दादाश्री : उससे तो अलग-अलग ही रहेगा।

प्रश्नकर्ता : उस समय आप क्या बातें करते हैं?

दादाश्री : सारी ही। वह तो जैसा हो वैसा ही।

प्रश्नकर्ता : यानी कि आप अंदर पूछते हैं? 'कैसी लग रही है तबीयत', ऐसा सब करते हैं।

दादाश्री : ये भाई कहते हैं कि दादा, अब रूम में ही अंदर थोड़ा चलिए, घूमिए। तो घूमते हैं। उस समय मैं देखता रहता हूँ कि, 'ओहोहो! कैसे दिख रहे हैं! कैसी हालत हुई है आपकी! आप जिस तरह से चल रहे हो उस पर मुझे हँसी आ रही है कि यह हालत तो देखो! किसी को छूने नहीं दें, ऐसे इंसान हैं, लेकिन आज आपको हाथ पकड़कर चलाना पड़ रहा है!'

प्रश्नकर्ता : तो इसमें, वह जो किसी को छूने नहीं दें, वह भी आप। हाथ पकड़कर चलते हैं, वह भी आप! पूरा सबकुछ अलग हो जाता है। इसमें अंहकार बिल्कुल भी नहीं रहता, मालिकी भाव नहीं रहता। सबकुछ खत्म हो जाता है पूरी तरह से!

दादाश्री : हम छूट देते हैं उसे, कि जो करना हो कर। फिर हम उनके साथ ऐसा मज़ाक भी कर लेते हैं कि 'ओहोहो! आप पर तो कुछ असर ही नहीं होता न! अब तो आप पूरे भगवान बन गए लगते हो न!' तब कहते हैं, "नहीं, 'आप' भगवान हैं, 'मैं' नहीं हूँ भगवान!"

प्रश्नकर्ता : ठीक है। आप कहते हैं कि, 'हम वाणी के ज्ञाता-द्रष्टा, वाणी को 'देखते' रहते हैं कि कैसी निकल रही है', तो एक्चुअली अंदर इस तरह से कहते हैं, अंदर इस तरह से बातें करते हैं, ऐसा ही कुछ है न?

दादाश्री : इस तरह से देखना सीखो। तू चंदूभाई को 'देखना' सीख।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन इस तरह से 'देखना' सीखना है अर्थात् इस तरह से बातें करनी हैं न अंदर ही अंदर?

दादाश्री : बातें करने से तो और भी अधिक

‘देखना’ सीख सकते हैं। इन्टरेस्ट आता जाता है इसलिए अलग रहने का भाव होता जाता है और हैं ही इतने अलग!

प्रश्नकर्ता : इस तरह बातचीत करने से वास्तव में जुदापन का व्यवहार शुरू हो जाता है।

दादाश्री : यों हँसी-मज़ाक करने से, मज़ाक उड़ाने से, देखने से जुदापन आ जाता है। मैं तो ऐसा भी पूछता हूँ न, ‘कैसे हो? मजे में हो न? अंबालाल भाई, ज़रा आनंद में आ गए हो, कुछ हुआ लगता है!’ इसलिए हम फ्रेश रह सकते हैं न! अतः हम पूरे दिन फ्रेश रहते हैं। वह (प्रयोग) इतना काम करता है।

(सूत्र-10)

जहाँ शुद्धात्मा का साम्राज्य है वहाँ कुछ भी इधर-उधर नहीं हो सकता। पेट का पानी तक नहीं हिलता। बुखार आए, देह जाने वाली हो, देह रहने वाली हो तब भी भीतर विचलित नहीं होता। कोई दखल ही नहीं। खुद का क्या जाएगा? जाएगा तो पड़ोसी का जाएगा! ‘चंदूभाई’ क्या कर रहे हैं ‘आपको’ उसे ‘देखना’ है, उसे ‘पुरुषार्थ’ कहते हैं।

अब आपका घर बदल गया है। आपका विभाग शुद्धात्मा विभाग और यह है चंदूभाई का विभाग। तो आपको दोनों विभागों का ध्यान रखना है। अब मन चंदूभाई के विभाग में गया। अब आपको इस मन का उपयोग नहीं करना है। मन जो कुछ भी करे, वह दौंव-पेंच खेले या कुछ भी, देखते रहना है। यदि मन खराब हो जाए और चंदूभाई ऊब जाए, तो फिर पीछे से कंधा थपथापा देना कि हम हैं आपके साथ, घबराना मत। कोई हमारा कंधा थपथपाने वाला नहीं मिलेगा इस दुनिया में, हम खुद ही थपथपाएँगे, तभी हम शुद्धात्मा

भगवान हैं। पहले कोई कहने वाला ही नहीं था न! कंधा थपथपाने वाला भी कोई नहीं था न!

यह अपना शुद्ध उपयोग कहलाता है। जब कोई नहीं हो तब हमें कहना चाहिए कि ‘चंदूभाई, आज आपने अच्छा किया’ और अगले दिन ज़रा चिढ़ जाए तो कहना चाहिए कि ‘भाई, इस तरह चिढ़ना अच्छा नहीं है, अतः प्रतिक्रमण करो।’ हो सकेगा ऐसा या नहीं? बस, इतना ही करना है हमें। आप पहचानते हो या नहीं फाइल नं वन को?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अच्छी तरह से। दादा के पास आने के बाद इस पड़ोसी को अच्छी तरह से पहचानते हैं।

दादाश्री : बचपन से पहचानते हो? उसका जीवन चरित्र पहले से ही पूरा जानते हो या नहीं जानते।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : तो फिर आपको उससे कहना है कि ‘भाई, अब ऐसा नहीं चलेगा। अब ऐसे चलो। अभी तक तो हम सो रहे थे इसलिए आपका चल गया। लेकिन अब हम जाग रहे हैं। अब जाग गए हैं तो चलो अब हमें पिछली बातों का दंड नहीं देना है आपको, लेकिन अब जाग गए हैं तो हमारी मर्यादा रखो।’ तो वे इतनी अच्छी तरह से मर्यादा रखेंगे। वास्तव में मर्यादा रखेंगे। यह तो ऐसा है कि कोई बताने वाला होना चाहिए। क्योंकि अपनी उपस्थिति में अपने घर में इन सभी ने खाया है। तो फिर ये ही अपने नहीं बनेंगे तो किसके बनेंगे?

(सूत्र-11)

जागृति को किसी एक जगह पर केन्द्रित

करने को उपयोग कहते हैं। 'शुद्ध उपयोग' किसे कहते हैं? शुद्धात्मा में ही उपयोग सेट करना! उपयोग, उसी को जागृति माना जाता है।

प्रश्नकर्ता : उपयोग और जागृति, इन दोनों को समझाइए।

दादाश्री : जागृति को किसी एक जगह पर केन्द्रित करना, वह उपयोग कहलाता है। जागृति किसी और में न चली जाए, जैसे कि संसार के फायदे-नुकसान में, एक ही जगह पर जागृति को केन्द्रित रखें, वह उपयोग! जहाँ जागृति बरते वह उपयोग, पर वह उपयोग शुभाशुभ का उपयोग कहलाता है। और शुद्ध उपयोग किसे कहा जाता है कि जो उपयोग शुद्धात्मा के लिए ही सेट किया हो। 'ज्ञानी पुरुष' की आज्ञा में उपयोग रहा, 'रियल'-'रिलेटिव' देखते-देखते चले तो समझना कि अंतिम दशा आ गई। यह तो रास्ते में बगलें झाँकता है कि 'स्टील ट्रेडिंग कंपनी, फलानी कंपनी, देखो यह कैसा है!' इस तरह से दूसरे उपयोग में रहे, वह अशुभ उपयोग कहलाता है और उपयोग यदि धर्म के लिए हो तो अच्छा। और शुद्ध उपयोग की तो बात ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : उपयोग और जागृति, इन दोनों में क्या डिफरन्स है?

दादाश्री : डिफरन्स तो यह लाइट जलती रहे और आप कोई काम नहीं करो और सोते रहो, तो लाइट व्यर्थ जाएगी न? और यह जो लाइट का प्रकाश है, वह जागृति ही है लेकिन यदि उसमें पढ़ाई करोगे तो कहा जाएगा कि उसका उपयोग किया।

प्रश्नकर्ता : तो क्या जागृति को एक जगह पर केंद्रित करना, वह उपयोग कहलाता है?

दादाश्री : ज्ञान देते हैं इसलिए जागृति तो है ही। उसमें काम कर लेना है। जागृति तो यों ही चली जाती है, यदि उपयोग करेंगे तो काम में आएगी। इलेक्ट्रिसिटी है ही अंदर, उसी को जागृति कहते हैं, परंतु बटन दबाएँगे तभी प्रकाश होगा न! यह जो बटन दबाते हैं, वह उपयोग है। वर्ना गर्मी में यों हाथ से पंखा घुमाते हैं। अरे, बटन दबा न! उपयोग कर न!

प्रश्नकर्ता : जागृति से उपयोग रहता है या उपयोग से जागृति रहती है?

दादाश्री : नहीं! जागृति से उपयोग रहता है और उपयोग रहे तो फिर से जागृति उत्पन्न होती है।

प्रश्नकर्ता : यह तो मुर्गी में से अंडा और अंडे में से मुर्गी?

दादाश्री : नहीं, लेकिन उपयोग ऐसी चीज़ नहीं है। जागृति ही मुख्य चीज़ है और यदि वह जागृति संपूर्ण हो जाए तो उसी को केवलज्ञान कहते हैं। अन्य कुछ भी नहीं है। उपयोग तो जागृति का परिणाम है। शुद्ध उपयोग जागृति का परिणाम है और शुभ उपयोग भी जागृति का परिणाम है। लेकिन वह भ्रांति की जागृति है और यह ज्ञान जागृति है।

जागृति को टॉप पर ले जाना ही अपना धर्म है। उसी को शुद्ध उपयोग कहते हैं।

(सूत्र-12)

'शुद्ध उपयोग' अर्थात् 'खुद' ज्ञाता-द्रष्टा है लेकिन देखता क्या है? शुद्ध व्यवहार को देखता है! निरंतर खुद को 'शुद्ध' देखता है और अन्य को भी 'शुद्ध', देखता है, वह है शुद्ध उपयोग!

प्रश्नकर्ता : शुद्ध उपयोग कैसे रखना है?

दादाश्री : चंदूभाई क्या कर रहे हैं, उसे देखते रहना है और जानते रहना है, वह शुद्ध उपयोग कहलाता है। यानी खुद की प्रकृति को निहारना ही शुद्ध उपयोग है। शुद्ध उपयोग यानी निरंतर जाग्रत। अन्य किसी में पड़ता ही नहीं। खाते ज़रूर हैं लेकिन खाना खाने में नहीं पड़े, किसी में नहीं पड़े। सभी को इतना ज्ञान नहीं रह सकता लेकिन कुछ अंशों तक का रहे न, तो भी बहुत हो गया! 'चंदूभाई क्या करते हैं', अगर आप उसे देखो न, तो भी बहुत हो गया! चंदूभाई खाने में लगे हुए हो और उन्हें आप देखो, तब भी आप बहुत आगे निकल गए। अपने यहाँ जिन्होंने ज्ञान लिया है, वे सभी शुद्ध उपयोग रखते हैं। और शुद्ध उपयोग क्या है? 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं, चंदूभाई का मन क्या कर रहा है', उन सभी को विस्तारपूर्वक जानना।

जैसे सिनेमा में बैठा हुआ व्यक्ति फिल्म और खुद, दोनों को विस्तारपूर्वक जानता है या नहीं जानता? उतने ही विस्तारपूर्वक जाने, तब वह शुद्ध उपयोग कहा जाएगा। जब द्रष्टा और दृश्य उतने ही दूर रहे, तब वह शुद्ध उपयोग कहा जाएगा।

अब, उसमें शुद्ध उपयोग की शुरुआत किस तरह से होती है? यदि कोई आपको धौल मारे, उस समय आपको ऐसा दिखाई दे कि 'ओहोहो! चंदूभाई जैसे अच्छे इंसान को भी यह धौल मार रहा है!' आपको दिखाई दे, फिर भी आप मानो कि, 'भुगतने वाले चंदूभाई हैं, अतः भूल तो उनकी खुद की ही है न!' यह सब आपको एक्ज़ेक्ट दिखाई दे और मारने वाला शुद्ध दिखाई दे, वह शुद्ध ही है। जितने शुद्ध आप हो, उतना ही शुद्ध वह भी है। भले ही उसने ज्ञान नहीं लिया लेकिन वह शुद्ध ही है। उसे यदि अशुद्ध

मानोगे तो आपका उपयोग बिगड़ जाएगा। तब आप कहो कि, 'उसका आत्मा तो शुद्ध ही है लेकिन बाहरी भाग? बाहरी भाग तो उसका खराब ही है न?' तब हम कहेंगे, 'नहीं, आपके लिए वह खराब नहीं है। उसके लिए वह खराब है।' तब आप पूछो, 'अब साहब, इसमें कहाँ न्याय है, बताइए, हमारे लिए क्यों खराब नहीं है? धौल मारता है, और फिर खुश होकर मारता है।' तब हम कहेंगे, 'वह उसके खुद के लिए खराब है लेकिन आपके लिए वह खराब नहीं है।' क्योंकि आपको समझ लेना चाहिए कि 'यह कर्म के उदय की वजह से मार रहा है। किसका कर्म? जिसे धौल लगती है, उसका कर्म। तब फिर उसका क्या दोष?' बताइए! कोई तरीका तो होगा न? इस तरह निर्दोष देखेंगे, तब वह शुद्ध उपयोग है! जब आपको गालियाँ दे रहा हो, उस समय निर्दोष दिखाई दे, तब वह शुद्ध उपयोग कहा जाएगा!

आपके हाथ से वह हजार रुपये का बटुवा ले ले तो ऐसा नहीं कहना चाहते कि उसे दे देना है, ऐसा अभिप्राय नहीं है। उस समय चंदूभाई उसे धौल लगाकर वापस ले भी ले, उसमें भी हर्ज नहीं है। लेकिन आपको यह पूरा सीन 'देखना' चाहिए। धौल मारे या फिर वह नाक दबाकर ले ले लेकिन आपको चंदूभाई को 'जानना' चाहिए, कि 'चंदूभाई ने क्या किया और उस आदमी ने क्या किया?' फिर भी उसमें अशुद्धता नहीं दिखाई देनी चाहिए, बस इतना ही। उसे कहते हैं, शुद्ध उपयोग!

प्रश्नकर्ता : सिर्फ यह 'देखना और जानना' इतना ही रहा करे तो उसी को कहते हैं शुद्ध उपयोग?

दादाश्री : हाँ, वही शुद्ध उपयोग है। अंदर

बुरे विचार आएँ कि 'ऐसा करो, वैसा करो', कुसंग के विचार आएँ, वे कैसे-कैसे आएँ, उन्हें आपने 'देखा और जाना' तो आपने फर्ज़ निभा दिया और तन्मयाकार हुए कि मर गए! 'देखने-जानने' का अर्थ क्या है कि तन्मयाकार नहीं हो सकते।

प्रश्नकर्ता : देखना-जानना और जागृति के बीच क्या फर्क है?

दादाश्री : देखना-जानना और जागृति दोनों अलग चीज़ें हैं। देखना-जानना तो करेक्टनेस है और जागृति तो कम-ज़्यादा होती रहती है। आवरण के अधीन है। अभी यदि खीर खाई हो तो जागृति डूल(कम) हो जाती है और भूखे रहें तो जागृति बढ़ जाती है। खीर खाकर देखना न एक दिन, पता चल जाएगा, कि कितनी जागृति रहती है खीर से?

(सूत्र-13)

उपयोग, उपयोग में रहे, वह केवलज्ञान।

मैंने जो ज्ञान दिया है, वह आप में दर्शन के रूप में परिणमित हुआ है। अब जैसे-जैसे हमारे साथ बैठोगे, वैसे-वैसे उतने अंश ज्ञान के बढ़ते जाएँगे और वैसे-वैसे शुद्ध उपयोग उत्पन्न होगा। जितना शुद्ध उपयोग उत्पन्न हुआ, उतना ही ज्ञान है। जब संपूर्ण रूप से निरंतर शुद्ध उपयोग बर्तता है तो उसे केवलज्ञान कहा जाता है। संपूर्ण शुद्ध उपयोग को केवलज्ञान कहा गया है, शुद्ध उपयोग से उसमें केवलज्ञान के बीज बोए गए। अंश केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। उसे सर्वांश होने में टाइम लगेगा, हर किसी के पुरुषार्थ के अनुसार। यदि हमारी आज्ञा में रहे तो उसे संपूर्ण शुद्ध उपयोग कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : आपने बताया कि, 'हमारा

उपयोग, उपयोग में रहता है', अर्थात् उसमें दो उपयोग हुए तो कौन सा उपयोग किस उपयोग में रहता है?

दादाश्री : पहला उपयोग यानी कि जो शुद्ध उपयोग है, वह। वह उपयोग अर्थात् खुद अपने आप को शुद्ध देखना, दूसरों को शुद्ध देखना, आज्ञा में रहना, वह सारा शुद्ध उपयोग कहलाता है और उस शुद्ध उपयोग पर भी उपयोग रखना है कि शुद्ध उपयोग कैसा बरतता है, वह केवलज्ञान कहलाता है। पहला उपयोग शुद्ध उपयोग कहलाता है और जो उपयोग, उपयोग में है, वह केवलज्ञान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : वह उपयोग ज्ञान स्वरूप कहलाता है?

दादाश्री : शुद्ध उपयोग ज्ञान स्वरूप कहलाता है और उपयोग, उपयोग में हों तो वह विज्ञान स्वरूप कहलाता है, केवलज्ञान स्वरूप कहलाता है। शुद्ध उपयोग की जो जागृति है, उस पर भी जागृति, वह केवलज्ञान की जागृति है, अंतिम जागृति है। 'ज्ञानी' की जागृति, वह शुद्ध उपयोग कहलाती है और उससे ऊपर की जागृति, वह केवलज्ञान का उपयोग कहलाता है। हमारी जागृति पर जागृति रहती है, लेकिन जैसी जागृति तीर्थकरों को रहती है उतनी अधिक नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : जिस समय अंतःकरण की क्रिया में उपयोग रहता है, ज्ञेय-ज्ञाता संबंध रहता है, उस समय खुद ज्ञाता और अंतःकरण ज्ञेय रहता है, उसमें भी वापस केवलज्ञान में उपयोग रहता है?

दादाश्री : इस ज्ञाता-ज्ञेय संबंध के उपयोग को 'वह' उपयोग 'जानता है' कि उपयोग कितना

कच्चा रहा, कितना पक्का हो गया! तीर्थकरों को ज्ञेय-ज्ञाता के ऊपर भी उपयोग रहता है, सब 'केवल' रहता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् केवलज्ञान में ज्ञेय से अलग हो गया कहा जाएगा?

दादाश्री : केवलज्ञान में ज्ञेय से अलग ही रहता है। लेकिन ज्ञेय-ज्ञाता वाले संबंध में ज्ञेय से अलग नहीं रह पाता, उसका संबंध रहता है और उस संबंध को वह जानता है कि ऐसा संबंध है।

उपयोग, उपयोग में रहता है अर्थात् जागृति, जागृति में ही रहती है, बाहर नहीं खिंचती। बाहर जो दिखाई देता है, वह सहज रूप से दिखाई देता है।

बाहर का आप देखते हो, वह तो अलग बात है, लेकिन जब आप अपने अंदर का ही सबकुछ देखोगे, उस समय आप केवलज्ञान सत्ता में ही हो। लेकिन अंश केवलज्ञान होगा, सर्वांश नहीं।

जितने समय तक आप ज्ञायक रहते हो उतने समय तक आप भगवान, उतने समय तक केवलज्ञान के अंश इकट्ठे होते हैं।

वीतराग होने की शुरुआत से लेकर वीतराग होने के एन्ड(अंत) तक वीतराग होते, होते, होते आगे जाकर जब सर्वांश रूप से वीतराग हो जाते हैं तब केवलज्ञान होता है। केवलज्ञान पहले नहीं होता, आंशिक वीतराग होते, होते, होते, होते जितने अंशों तक वीतराग हो जाता है, उतने अंश का केवलज्ञान होता है। केवलज्ञान भी उतने अंशों का माना जाता है। उसके बाद संपूर्ण केवलज्ञान कब माना जाता है कि जब सर्वांश वीतराग हो जाता है तब संपूर्ण केवलज्ञान होता है।

(सूत्र-14)

जब कभी अकेले बैठे हुए हों तब चंदूभाई को देखते रहना कि उनका मन क्या कर रहा है, उनकी बुद्धि क्या कर रही है, अहंकार क्या कर रहा है, और जब सब शांत होगा तब चंदूभाई जुदा दिखाई देंगे, उन्हें देखते रहना है। 'पुद्गल' को ही जानना और समझना, उसे कहते हैं 'ज्ञाता'। ज्ञेय और ज्ञाता एकाकार नहीं होते, उसे कहते हैं 'ज्ञान'। 'खुद' के प्रदेश में 'देखना-जाननापन' ही है। और कुछ भी नहीं है। परमात्मापन है!

प्रश्नकर्ता : मैं ज्ञाता-द्रष्टा बनकर देखने का प्रयत्न करता हूँ लेकिन उस क्षण भी ऐसा लगता है कि बुद्धि देख रही है।

दादाश्री : ये सही कह रहे हैं। बुद्धि ही देखती है, (रियल) ज्ञाता-द्रष्टा तो वहाँ से शुरू होता है, जहाँ पर बुद्धि भी नहीं पहुँच सकती।

इन सभी ज्ञेय चीजों का ज्ञाता-द्रष्टा 'मैं' नहीं लगता, परंतु यह बुद्धि लगती है। लेकिन इस बुद्धि का ज्ञाता-द्रष्टा कौन है? आत्मा। जब 'ऐसा लगता है' तब कहा जाएगा कि द्रष्टा की तरह देखा और जब 'जानते हैं' तब ज्ञाता की तरह जाना।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् क्या ऐसा है कि इस पूरे दिन की जो देखने की प्रक्रिया थी तो उसे देखने वाला जो है, उसे भी देखने वाला कोई और है? तो प्रथम देखने वाला कौन है?

दादाश्री : उसे उपादान कहो, बुद्धि कहो या अहंकार कहो, और उसे भी जो देखता है, वह आत्मा है। देखने वाले को भी जानता है।

प्रश्नकर्ता : तो इसमें प्रज्ञा कहाँ पर आई?

दादाश्री : वही प्रज्ञा है न! मूल आत्मा तो मूल आत्मा ही है।

प्रश्नकर्ता : उस डिमार्केशन का कैसे पता चलेगा कि यह 'देखना-जानना' बुद्धि द्वारा है या 'खुद के' द्वारा?

दादाश्री : बुद्धि का देखना-जानना तो यों जो आँखों से दिखाई देता है, वही है अथवा कान से जो सुनाई देता है वह, जीभ से चख सकते हैं वह, वह सारी बुद्धि है।

प्रश्नकर्ता : यह तो इन्द्रियों का हुआ लेकिन अंदर भी दूसरा सब चल रहा होता है और बुद्धि देखती है कि ये पक्षपाती हैं, ऐसे हैं, वैसे हैं, वह सब बुद्धि ही देखती है न?

दादाश्री : जो ऐसा सब देखती है, वह बुद्धि ही है। आत्मा का ज्ञान-दर्शन तो है देखना और जानना, वह अलग चीज़ है। जो द्रव्यों को देखता व जानता है, द्रव्य के गुणों को जानता है, उसके पर्यायों को जानता है, उन सब को देखता और जानता है, वह आत्मा है। या फिर जो मन के सभी पर्यायों को जानता है। बुद्धि तो मन के पर्यायों को कुछ हद तक ही जान सकती है, जबकि आत्मा मन के सभी पर्यायों को जानता है। बुद्धि को जानता है, परिस्थितियों को जानता है, अहंकार के पर्यायों को जानता है, सभी कुछ जानता है। जहाँ बुद्धि नहीं पहुँच सकती वहाँ उसका (आत्मा का) शुरू होता है।

प्रश्नकर्ता : और जो चंदूभाई को देखती है, क्या वह बुद्धि है?

दादाश्री : उसे बुद्धि देखती है और बुद्धि को जो देखता है, वह आत्मा है। बुद्धि क्या कर रही है, मन क्या कर रहा है, अहंकार क्या कर

रहा है, जो इन सभी को जानता है, वह आत्मा है। आत्मा से आगे परमात्मा पद है। जो शुद्धात्मा बन गया, वह परमात्मा की तरफ जाने लगेगा और जो परमात्मा बन गया उसे केवलज्ञान हो जाएगा। या फिर जिसे केवलज्ञान हुआ वह बन गया परमात्मा। फुल(पूर्ण) हो गया, निर्वाण पद के लायक हो गया। अतः देखने-जानने का उपयोग रखना चाहिए, पूरे दिन।

प्रश्नकर्ता : जो इस पुद्गल की सभी चीज़ों को देखता है और देखने की सभी जो क्रियाएँ हैं, वे बुद्धि क्रिया हैं या ज्ञान क्रिया हैं?

दादाश्री : यों तो वह प्रज्ञा के भाग में ही जाती है न! अहंकार और बुद्धि की क्रिया से थोड़ा समझ में आता है, बाकी प्रज्ञा के बिना समझ में नहीं आ सकता।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि 'जब हम ज्ञान देते हैं तब आत्मा और देह को अलग कर देते हैं', तो इन दोनों को अलग करने वाले को कौन देखता है?

दादाश्री : दो चीज़ें हैं जो देखती हैं। एक तो प्रज्ञा है और प्रज्ञा का काम खत्म हो जाने के बाद फिर आत्मा है। आत्मा ज्ञायक के रूप में रहता है। प्रज्ञा से लेकर आत्मा तक 'देखने वाला' है। प्रज्ञा का काम खत्म होने पर आत्मा खुद ज्ञायक बन जाता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् यह जो आत्मा का देखना व जानना कहा है, तो वह द्रव्यों को जानता है?

दादाश्री : हं!

प्रश्नकर्ता : वह द्रव्यों को, द्रव्यों के गुणधर्मों को और द्रव्यों के पर्यायों को किस प्रकार से

जानता है, उसमें क्या-क्या देख सकता है? उसका एक्ज़ेक्ट उदाहरण दीजिए न!

दादाश्री : 'ये किसके गुणधर्म हैं', वह सब जानता है। पुद्गल के गुणधर्म हैं या चेतन के गुणधर्म हैं। फिर अन्य सभी गुणधर्मों को भी जानता है। आकाश के गुणधर्म क्या हैं, वह सब भी जानता है। फिर काल के क्या गुणधर्म हैं, उन्हें भी जानता है।

(सूत्र-15)

दो प्रकार के अवस्था रूपी ज्ञेय हैं और एक तत्त्व स्वरूपी ज्ञेय है। तत्त्व स्वरूपी अभी आपको समझ में नहीं आएगा। (1) ज्ञाताभाव जब ज्ञेयभाव से दिखेगा तब खुद अपने स्वभाव में आएगा। (2) ज्ञेय में जो ममत्वपन था वह छूट गया और जैसे-जैसे ज्ञेय को ज्ञेय स्वरूप से देखेगा वैसे-वैसे आत्मपुष्टि होगी।

जब आत्मा, तत्त्व स्वरूप से दिखाई देगा तब बाकी के सभी तत्त्व दिखाई देंगे। यथार्थ ज्ञेय, तत्त्व स्वरूप से है और 'केवलज्ञान' के बगैर तत्त्व स्वरूपी ज्ञेय देखा नहीं जा सकता। लेकिन यदि श्रद्धा में आएगा तो केवलज्ञान में आएगा ही। ज्ञाताभाव समझ में आ गया अर्थात् एक्सट्रेक्ट (सार) समझ में आ गया।

चार भाग हैं - दो भाग द्रष्टा और दो भाग दृश्य।

प्रश्नकर्ता : दादा, उस द्रष्टा के दो भाग कौन से हैं और दृश्य के दो भाग कौन से हैं?

दादाश्री : द्रष्टा मूल स्वरूप से रहता है, द्रष्टा स्वरूप से वीतराग और दूसरा द्रष्टा है 'मैं'। जो बुद्धि है, वह 'इसे' (प्रतिष्ठित आत्मा के कार्यों को) देखती है। पहला दृश्य प्रतिष्ठित आत्मा है

और दूसरा दृश्य है उसके कार्य। दो प्रकार के दृश्य और दो प्रकार के द्रष्टा!

दो प्रकार के ज्ञाता हैं और दो प्रकार के ज्ञेय! अर्थात् आत्मा (प्रज्ञा, शुद्धात्मा) और आत्मा (विभाविक आत्मा, विभाविक 'मैं') के पर्याय (वह बुद्धि है)। और यह प्रतिष्ठित आत्मा और उसके पर्याय, ये दोनों ज्ञेय हैं। भगवान (मूल द्रव्य) में कुछ भी नहीं होता, पर्याय में दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : दादा! आपने जो दो द्रष्टा के बारे में कहा है, उनमें से जो दरअसल आत्मा है, वही मूल द्रष्टा है?

दादाश्री : हाँ, शुद्धात्मा।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा और जो दूसरा द्रष्टा है वह, आत्मा के जो पर्याय हैं, वे हैं न?

दादाश्री : वे जो (विभाविक आत्मा) के पर्याय उत्पन्न होते हैं, वे।

आत्मा के जो पर्याय हैं, वे किसके पर्यायों को देखते हैं? यह मूल आत्मा प्रतिष्ठित आत्मा के सभी पर्यायों को नहीं देखता। उसे इसकी पड़ी भी नहीं है, वीतराग!

प्रश्नकर्ता : वह वीतराग है?

दादाश्री : हाँ। वीतराग तो ये (आत्मा के पर्याय) भी हैं, जो ये जानते हैं कि 'यह राग है' और 'यह द्वेष है' जबकि 'भगवान' (मूल आत्मा) खुद वीतराग रहते हैं। उन्हें इसमें कोई राग भी नहीं है और द्वेष भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पहला द्रष्टा, वह दरअसल आत्मा है, वह क्या देखता है?

दादाश्री : वह तो वीतरागता को ही देखता

है। वह राग-द्वेष को कैसे देख सकता है? उसमें राग-द्वेष नहीं हैं, कुछ भी नहीं है। वह तो, जो कुछ भी उदय के अधीन है, उसी को देखता रहता है। उसके लिए अच्छा-बुरा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो वह तत्त्व के रूप में देखा करता है सभी को?

दादाश्री : तत्त्व को देखता है और अतत्त्व को भी देखता है।

प्रश्नकर्ता : अतत्त्व को भी देखता है?

दादाश्री : दोनों को ही देखता है, लेकिन वीतराग।

प्रश्नकर्ता : और दूसरे द्रष्टा कौन हैं?

दादाश्री : वे उसके पर्याय हैं।

प्रश्नकर्ता : मूल आत्मा के पर्याय भी द्रष्टा के रूप में ही रहते हैं?

दादाश्री : द्रष्टा के रूप में रहते हैं, वीतराग भी हैं लेकिन जब तक ऐसा जानते हैं कि 'यह बुरा है और यह अच्छा है', तब तक वे बुद्धि के पर्याय कहलाते हैं। (ज्ञान लेने के बाद अहंकार नहीं रहता इसलिए जब बुद्धि देखती है तब उसमें अहंकार नहीं होने की वजह से राग-द्वेष नहीं होते।) मूल आत्मा के पर्याय भी शुद्ध हैं। मूल आत्मा का ज्ञान शुद्ध है, उसके पर्याय शुद्ध हैं और यह (विभाविक आत्मा का) (ज्ञानी पद में) ज्ञान शुद्ध है, पर्याय शुद्ध नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान शुद्ध है और पर्याय शुद्ध नहीं हैं, इसके बावजूद भी वे देखते और जानते हैं?

दादाश्री : हाँ। इन दादा में जैसी है, वैसी वीतरागता। पर्याय में भी उन्हें राग-द्वेष नहीं होते।

फिर भी ऐसा जानते हैं कि, 'यह अच्छा है और यह बुरा है।' उससे नीचे वाले भाग में बुद्धि जैसा पद है, जिसे पौद्गलिक माना जाता है। उसमें से राग-द्वेष भी होते हैं। (क्योंकि वह बुद्धि जो देखती और जानती है, उसमें अहंकार के एकाकार रहने से राग-द्वेष होते हैं) और यह दृश्य क्या है? उसके तो चार भाग करना अच्छा है। एक द्रष्टा, दूसरा द्रष्टा, तीसरा दृश्य और चौथा दृश्य।

प्रश्नकर्ता : फिर दूसरा ज्ञेय और दूसरा ज्ञाता, और पहला ज्ञाता और पहला ज्ञेय भी कहा है न?

दादाश्री : हाँ, ज्ञाता और द्रष्टा, वे दोनों साथ में हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् दो प्रकार से ज्ञाता और द्रष्टा हैं, दो प्रकार से दृश्य और दो प्रकार से ज्ञेय।

दादाश्री : ठीक है। जब ज्ञेय से शुद्धता आ जाती है (जब ज्ञेय में तन्मयाकारपना छूट जाता है, ज्ञेय से छूटता है, वीतरागता से ज्ञेयों का ज्ञाता रहता है तब ज्ञेयों से खुद की शुद्धता आती-जाती है), इसलिए वापस मूल स्वरूप में आ जाता है।

प्रश्नकर्ता : यह बात ज़रा फिर से बताइए।

दादाश्री : ज्ञेय से शुद्धता आ जाती है इसलिए 'खुद' पूरा ही शुद्ध हो जाता है, पर्याय और ज्ञेय से। सोचकर देखना, यह बहुत सूक्ष्म बात है।

स्वरूप का भान होने से पहले हम 'प्रतिष्ठित आत्मा' को ही 'ज्ञाता' मानते थे। 'स्वरूप ज्ञान' के बाद 'ज्ञाता' खुद ही ज्ञेय बन जाता है और उसके स्थान पर 'जागृति' खुद ही 'ज्ञाता' बनती है। अर्थात् पहले जो 'मैं' 'प्रतिष्ठित आत्मा' के तौर पर था, अब वह 'मैं' जागृति के तौर पर

हैं और मूल आत्मा तो अभी उससे भी आगे है! संपूर्ण रूप से जाग्रत हो जाने पर 'मूल आत्मा' में एकाकार हो जाता है। जब तक संपूर्ण रूप से जाग्रत नहीं होता तब तक अलग रहता है, तब तक अंतरात्मा के तौर पर रहता है। वहाँ पर बहिर्मुखी पद छूट चुका होता है। अंतरात्म दशा खत्म होते ही परमात्म पद प्राप्त होता है!

(सूत्र-16)

केवलज्ञान अर्थात् क्या? सौ प्रतिशत जाग्रत, संपूर्ण रूप से जाग्रत!

प्रश्नकर्ता : अब जैसे-जैसे जागृति बरतती जाती है वैसे-वैसे ज्ञाता-द्रष्टापन भी बढ़ता जाता है ?

दादाश्री : ज्ञाता-द्रष्टापन जागृति के अधीन है, बुद्धि के अधीन नहीं है। जगत् बुद्धि के अधीन है। बुद्धि और जागृति दो अलग चीजें हैं। अंत में जब जागृति पूर्ण हो जाती है तब वह केवलज्ञान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार यह टेपरिकॉर्डर सभी आवाजों को वीतराग भाव से ग्रहण कर सकता है, उसी प्रकार से जैसे-जैसे जागृति बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे क्या ऐसा होगा कि प्रत्येक पर्यायों को देख पाएँगे ?

दादाश्री : सभी कुछ देख सकते हैं। जागृति ही आत्मा है।

प्रश्नकर्ता : जागृति को देखने वाला आत्मा है या जागृति खुद आत्मा है ?

दादाश्री : जागृति खुद ही आत्मा है। आत्मा कोई अन्य चीज नहीं है, जागृति ही है।

आपको जागृति तो आ गई है। अब जागृति बढ़ते-बढ़ते-बढ़ते केवलज्ञान तक पहुँचेगी।

केवलज्ञान अर्थात् फुल स्कोप वाली जागृति। वह कुछ हद तक की जागृति हुई है। निरंतर जागृति अर्थात् उसे केवलदर्शन कहा जाएगा, बस! अगर फुल स्कोप में हो जाए तो केवलज्ञान कहा जाएगा। जागृति जब पूर्णत्व तक पहुँच जाती है तब उसी को केवलज्ञान कहते हैं। फिर उससे आगे स्टेशन नहीं है। यही अंतिम स्टेशन है।

जागृति ही ज्ञान है और संपूर्ण जागृति को ही केवलज्ञान कहते हैं। तमाम प्रकार की जागृति, एक-एक अणु, एक-एक परमाणुओं की जागृति, उसी को कहते हैं केवलज्ञान। केवलज्ञान की जो अंतिम सीढ़ी है, उसमें केवल स्वरूप की ही रमणता रहती है।

संपूर्ण जागृति ही केवलज्ञान है और केवलज्ञान खुद ही परमात्मा है और खुद उन परमात्मा से हम बातचीत करते हैं, निरंतर और आप सब हमारे साथ बैठे हैं, फिर किसी को क्या दुःख हो सकता है? परमात्मा खुद कभी भी प्रकट नहीं होते, चौबीस तीर्थकरों के अलावा किसी में भी परमात्मा खुद प्रकट नहीं हुए हैं!

(सूत्र-17)

जब पर-परिणति बंद हो जाए और स्व-परिणाम में रहने लगे, स्व-परिणाम में मुकाम हो जाए तब वह भगवान बन जाता है! पूरा जगत् पर-परिणति में है, स्व-परिणति को देखा ही नहीं है। स्व-परिणाम ही परमात्म पद है!

प्रश्नकर्ता : दादा, स्व-परिणाम और पर-परिणाम को एकजैक्टली (यथार्थ रूप से) जुदा करना, क्या वह उपयोग कहलाएगा ?

दादाश्री : खुद के होम डिपार्टमेन्ट के दरवाजे पर खड़े रहकर, होम या फॉरेन का जो

कुछ भी आए तो, यदि होम का आए तो अंदर, फॉरेन का आए तो अंदर नहीं, ऐसा रखो।

प्रश्नकर्ता : तो क्या वह एकज्जेक्ट उपयोग कहा जाएगा ?

दादाश्री : वह जो है न, शुरुआत का जो एकज्जेक्ट उपयोग है, वह स्थूल उपयोग है।

प्रश्नकर्ता : वह भी स्थूल में जाता है ?

दादाश्री : सूक्ष्म का तो आपको पता भी नहीं चलता। सूक्ष्म यदि आपको समझाऊँ तब भी समझ में नहीं आएगा। क्योंकि वह ऐसा नहीं है कि शब्दों से समझ में आ जाए। वह तो, जब आपको खुद को अनुभव होगा, वास्तव में तभी समझ में आएगा। आपको बहुत जानने की जरूरत भी नहीं है। आप तो यह स्थूल तक आ गए तब भी बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : स्थूल के परिणामस्वरूप फिर सूक्ष्म की ओर जाएगा ?

दादाश्री : वही सूक्ष्म की ओर है न! यहीं पर साफ करना है। इतना साफ कर दिया तो सूक्ष्म तो अपने आप ही आएगा। हमें करने नहीं जाना पड़ेगा। वह तो अपने आप आएगा। यह तो ऐसा है कि इसका पारायण नहीं हुआ है इसलिए वह नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : इस अभ्यास से आ सकता है न, उपयोग ?

दादाश्री : मनुष्य को अभ्यास तो करना चाहिए न? अभ्यास यानी खुद जागृति में तैयार रहना।

प्रश्नकर्ता : वह क्या बताया ?

दादाश्री : जागृति यों ही चली जाती है।

गलत हुआ, गलत हो रहा है लेकिन कुछ अभ्यास नहीं करता। जागृति दिखाती ही रहती है न, कि गलत हो रहा है। तुझे जागृति कुछ दिखाती है ?

प्रश्नकर्ता : दिखाती है ऐसा सब।

दादाश्री : दिन भर? जागृति कितनी बढ़ गई! दुनिया खोजती है लेकिन ऐसी जागृति नहीं रह सकती। निरंतर वह जागृति रहे, वैसी जागृति दी है मैंने आपको। उस जागृति का उपयोग करना है। जरा पहले की आदत पड़ी हुई है न! फिसलन वाली जगह पर फिसलने की आदत पड़ी हुई है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही बात है।

दादाश्री : तो वहीं पर जरा जागृति रखी कि यह फिसलन वाली जगह है और फिसल सकते हैं फिर भी उदय में आया है, तो हमें कहना है कि, “चंदूभाई, तू फिसल रहा है और ‘मैं देख रहा हूँ।’” इसमें हर्ज है क्या ?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : लेकिन यह तो फिसल ही जाता है, वह खुद भी चंदूभाई के साथ फिसल जाता है। अतः वहाँ पर उपयोग रखना है। जिस प्रकार कुएँ पर खड़ा आदमी, अपनी वाइफ को याद करेगा, बच्चों को याद करेगा या कुएँ को याद रखेगा? यदि कुएँ पर बैठना पड़े तो सावधान रहेगा न?

या फिर समुद्र के बीच कोई दो फुट का रास्ता बनाया हुआ हो, जिसके दोनों ओर रेलिंग न हो, और उस पर से जाना पड़े, तो क्या उस समय वाइफ याद आएगी, लक्ष्मी याद आएगी या बंगला याद आएगा ?

प्रश्नकर्ता : कोई भी याद नहीं आएगा।

दादाश्री : हं, उसी को उपयोग कहते हैं।

दादा ने सिद्धांतपूर्वक एक अवतारी मोक्षमार्ग दिया है, तो फिर उस सिद्धांत को हमें पकड़े रखना चाहिए। उपयोग उसी में रखना चाहिए और यदि वहाँ समुद्र में गिर जाए तो एक ही जन्म का मरण होगा, जबकि यहाँ लाखों जन्मों का मरण हो जाता है। भीतर तो चंदूभाई से कहना चाहिए कि 'सीधे रहो।'

(सूत्र-18)

जागृति के परिणामस्वरूप सूक्ष्मता आती है लेकिन अभी तो सूक्ष्मता से भी बहुत आगे जाना है। उन सभी किलों को पार करने के बाद आत्मा स्वसंवेदन में आएगा। स्वसंवेदन बढ़ते-बढ़ते आखिर में स्पष्टवेदन उत्पन्न हो जाएगा।

फिर (तुम्हारे) भीतर कहे अनुसार चलता है न या नहीं चलता?

प्रश्नकर्ता : बहुत अच्छा है, अच्छी तरह से चलता है।

दादाश्री : तब ठीक है। भूल तो बाहर होती ही रहेगी। तुझे पता चलेगा, तो भान होता जाएगा। जब अपने आप ही भूल का भान हो जाए, तब मैं कहूँगा कि ये ज्ञानी हैं! भूल में ही चलता रहता है मनुष्य।

भूल को ही सत्य मानकर चलता रहता है। फिर खुद को ज़रा वेदन आए तब फिर सोचता है कि, अरे! ऐसा क्यों होता है? उसके बाद पता चलता है। बिना वेदन के पता चले तब समझना कि अब ज्ञान प्रकट हुआ है! यह ज्ञान और यह अज्ञान ऐसा भेद पड़ जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : खुद की भूल पता चले, फिर क्या भूल होनी बंद हो जाती है?

दादाश्री : बंद नहीं होती, उसका हर्ज नहीं

है। पता चला यानी बहुत हो गया। भूल बंद हो या नहीं हो, उसके लिए तो माफी ही है। भूल का पता नहीं चलता उसके लिए माफी नहीं है। बंद नहीं हो, उसमें हर्ज नहीं है। अभानावस्था को माफी नहीं है। अभानावस्था के कारण भूल होती है।

प्रश्नकर्ता : ऐसी अभानावस्था कितनी ही बार उत्पन्न हुई होगी। बाकी कितनी ही तरफ अभानावस्था रही होगी, तो वहाँ पर भूलें होती ही रही होंगी न?

दादाश्री : लेकिन वे होती ही रहती हैं, होती रही होंगी नहीं, होती ही रहती हैं!

प्रश्नकर्ता : वह अभानावस्था छूट जाए और भूल दिखाई दे, ऐसा किस तरह हो पाएगा?

दादाश्री : उसके लिए तो जागृति आनी चाहिए और जागृति आ जाए तो वे दो भाग अलग ही होते जाते हैं। जो कुछ भी आता जाए उसके दो टुकड़े होते ही जाते हैं यदि जागृति हो तो, देखते ही, ऑटोमैटिकली।

प्रश्नकर्ता : यानी कि इसी को मुख्य चीज़ कहा गया है?

दादाश्री : हाँ, मुख्य चीज़ यही है न!

प्रश्नकर्ता : यानी कि इसी को जागृति कहा गया है और वह जो भूल हो जाना, उन दो भागों को जुदा नहीं किया तो क्या उसे ऐसा कहेंगे कि भूल हो गई?

दादाश्री : वह भूल ही है न, फिर।

प्रश्नकर्ता : उसी को भूल कहते हैं?

दादाश्री : ऐसी ही जागृति होनी चाहिए

कि कोई सूक्ष्म से सूक्ष्म भूल भी (जागृति से बाहर) न जाए।

प्रश्नकर्ता : उसमें, वह विभाजन किसका होता है, उन दोनों भागों में? उन दो भागों में विभाजन किसका करते हैं?

दादाश्री : देखते ही विभाजन होता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन दोनों किसमें-किसमें विभाजित होते हैं?

दादाश्री : देखते ही पुद्गल, (जो पूरण और गलन होता है) पुद्गल में और चेतन, चेतन में।

प्रश्नकर्ता : यह तो पूरी सूक्ष्म जागृति की बात हुई। यह सूक्ष्म जागृति और यह जो सूक्ष्म में अंदर भूलें होती हैं।

दादाश्री : सूक्ष्म में तो बहुत सारी भूलें होती हैं। यह तो, स्थूल में भी बहुत सारी होती हैं।

प्रश्नकर्ता : इसे स्थूल कहा जाएगा, इस जागृति को?

दादाश्री : यह सब तो स्थूल है।

प्रश्नकर्ता : पुद्गल और चेतन के परिणाम को जुदा रखना?

दादाश्री : वह स्थूल है, उसे स्थूल कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्यों?

दादाश्री : स्थूल नहीं तो और क्या है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, यानी कि व्यवहार में तो सामने वाले को वाणी व वर्तन से परेशानी हो जाती है, दुःख हो जाता है, वह कितना ज्यादा...

दादाश्री : उसकी कोई गिनती मत करना है।

प्रश्नकर्ता : उसकी गिनती नहीं करना है?

दादाश्री : वे तो सभी नोकर्म हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी कि अंतर जागृति को, इन दोनों परिणामों को जुदा करते रहने को ही सब से बड़ी चीज़ कहा गया है।

दादाश्री : वह तो इससे भी बहुत आगे की बात है, सूक्ष्म से भी आगे की है। लेकिन अभी तक तो स्थूल ही नहीं हुआ है न!

प्रश्नकर्ता : स्थूल और सूक्ष्म का अंतर समझ में नहीं आया।

दादाश्री : कषाय भाव सूक्ष्म में होते हैं। वे कषाय भाव अलग हो जाते हैं, चेतन कषाय भाव से अलग हो जाता है। कषाय भाव पुद्गल हैं और वे सूक्ष्म कहे जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : वे सूक्ष्म में हैं, और स्थूल में?

दादाश्री : वह सबकुछ जो कि व्यवहार में है, वह स्थूल है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि व्यवहार को पुद्गल मानता है और खुद जुदा रहता है। ऐसा? पुद्गल और चेतन स्थूल में कैसे अलग हैं?

दादाश्री : ये जो भूलें दिखाई देती हैं, वे।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। यानी कि व्यवहार में जो होता है उसमें भूलें हैं।

दादाश्री : हाँ, यह सब तो स्थूल में आता है।

प्रश्नकर्ता : उन सब को देखना व जानना है।

दादाश्री : वह सब स्थूल में।

प्रश्नकर्ता : वह जो जागृति रहती है, उसे स्थूल जागृति कहते हैं? और सूक्ष्म में, यानी कि कषाय, क्या कषाय परिणाम पुद्गल में होते हैं?

दादाश्री : कषाय, सिर्फ कषाय पर ही लागू होता है।

प्रश्नकर्ता : कषाय में क्या-क्या आता है?

दादाश्री : कषाय... पुद्गल और चेतन, दोनों अगल हो जाते हैं। कषाय, पुद्गल में चले जाते हैं और चेतन, चेतन में चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् कषायों का उद्भव होना, उसे पुद्गल परिणाम मानता और जानता है। ऐसा? निमित्त से परिणाम उत्पन्न होता है?

दादाश्री : हाँ, फिर जब उसे यह जानता है तब अलग हो जाते हैं। कषाय पुद्गल में चले जाते हैं। उसमें जो चेतन भाग है, मिश्र में, वह इस तरफ चला जाता है। और ऐसा सहज रूप से होता रहता है, करना नहीं पड़ता।

प्रश्नकर्ता : उसकी, वह सहज क्रिया है।

दादाश्री : हाँ। जागृति ही मुख्य चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि इस तरह अलग होना, क्या वह सहज है?

दादाश्री : सहज है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर जागृति किसे कहा है? वह अलग होने की क्रिया, वही जागृति है न?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो?

दादाश्री : जागृति से वह सहज ही अलग हो जाता है। जागृति ही मुख्य चीज़ है। जागृति से ही वह अलग हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, जागृति से फिर वह परिणाम तो सहज ही हो जाता है।

दादाश्री : नहीं-नहीं! ये दोनों अलग हो जाते हैं।

पूरा जगत् मनोवेदना में है। स्वसंवेदन किसी को भी नहीं हुआ है। वर्ना मोक्ष में चला गया होता। आपको आत्मा का स्वसंवेदन रहा करता है। भीतर में लक्ष रहा करता है, जागृति रहा करती है, उसे स्वसंवेदन कहते हैं। उसका लाभ भी मिलता रहता है, निराकुलता का लाभ भी मिलता रहता है। व्याकुल होने वाली जगह पर निराकुलता में रह पाते हैं और हम तो भयंकर व्याकुलता वाली जगह पर भी निराकुलता में रहे हैं, इसे तो टेस्टेड कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : जागृति से हमें दिखाई देता है कि इतने अंतराय हैं। इससे ज़्यादा नहीं दौड़ सकते। अतः जहाँ-जहाँ पर सूक्ष्मता से पहुँचने जाते हैं, वहाँ-वहाँ पर पूरा आवृत होता हुआ दिखाई देता है, जैसे कि बीच में दीवार आ गई हो। अब आगे नहीं जा पाते उस एनालिसिस में, तो दोषों के प्रतिक्रमण करते हैं और जो असर होता है उसका पता चलता है, खुद अलग रहता है, लेकिन जिस सूक्ष्मता से वे निर्मूल होने चाहिए, उस प्रकार से हो नहीं पाते।

दादाश्री : उसमें टाइम लगेगा। पूरी सूक्ष्मता आ ही जाएगी। लेकिन अभी तो सूक्ष्मता से भी बहुत आगे जाना है। उन सभी किलों को पार करने के बाद आत्मा स्वसंवेदन में आएगा।

प्रश्नकर्ता : वही स्पष्टवेदन कहलाता है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन स्पष्टवेदन होने से पहले खुद को स्वसंवेदन का पता चलता है। जब स्वसंवेदन बढ़ता जाए न, तब हम समझ जाते हैं कि यह बढ़-बढ़कर कहाँ तक पहुँचेगा? तब

कहते हैं, 'स्पष्टवेदन तक'। लेकिन जब धीरे-धीरे जागृति बढ़ जाएगी, तब।

प्रश्नकर्ता : आत्मा के स्वसंवेदन का अनुभव अभी नहीं होता ?

दादाश्री : आत्मा खुद स्वसंवेदन ही है लेकिन ये पहले के पर्याय, पहले का अहंकार जाता नहीं न! पहले के जो अहंकार व ममता हैं, वे जाते नहीं न, अभी भी।

(सूत्र-19)

जहाँ जागृति है, उतना ही आत्मा के नज़दीक पहुँचा। जितने नज़दीक पहुँचे उतना ही उजाला अधिक, उतना ही प्रकाश अधिक।

इस ज्ञान का अर्थ क्या है? जागृति। अपनी यह आत्मजागृति है और उसका फल है केवलज्ञान। निरंतर जागृति रहनी चाहिए। यदि एक सेकण्ड के लिए भी अजागृति रहे तो नहीं चलेगा। संपूर्ण जागृति न रहे लेकिन कुछ अंशों तक तो निरंतर रहनी चाहिए! जब संपूर्ण जागृति हो जाए तब केवलज्ञान कहा जाएगा, संपूर्ण और निरंतर! आप में यह अपूर्ण और निरंतर जागृति की शुरुआत हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : अपूर्ण और निरंतर जागृति, यह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : अर्थात् केवलज्ञान नहीं, यदि पूर्ण होता तो केवलज्ञान कहलाता। यानी कि आपका अब पुरुषार्थ करना बाकी रहा है, क्योंकि आप पुरुष बन गए हैं इसलिए। तो अब आप पुरुषार्थ करो। जितना आज्ञा का पालन करोगे उतनी ही अंदर जागृति बढ़ती जाएगी, पूर्णता उत्पन्न होती जाएगी। जहाँ जागृति है, उतना ही आत्मा के नज़दीक पहुँचा। जितने नज़दीक गए उतना उजाला अधिक, उतना ही प्रकाश होता जाएगा।

(सूत्र-20)

आत्मा अनुभव किया हुआ होना चाहिए, शास्त्रज्ञान द्वारा जाना हुआ नहीं चलेगा। शास्त्रज्ञान से निबेड़ा नहीं आएगा, अनुभव ज्ञान से निबेड़ा आता है!

केवलज्ञान अर्थात् कोई अवलंबन नहीं, निरालंब। किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रही। सिर्फ एक्सल्यूट और वह एक्सल्यूट आत्मा हमने देखा है। यानी कि उसके लिए कोई शब्द नहीं है कि हम आपको केवलज्ञान के बारे में बता सकें। अतः अन्य शब्दों से आपको बताते रहते हैं। यथार्थ शब्द नहीं हो सकते। उसके लिए वाणी नहीं हैं। क्योंकि हमने वह निरालंब पद देखा है इसलिए हम उसका वर्णन कर सकते हैं, वर्ना वर्णन नहीं कर सकते।

प्रश्नकर्ता : 'जे पद श्री सर्वज्ञे दीतुं ज्ञानमां...'

दादाश्री : ज्ञानी भगवान ने, सर्वज्ञ भगवान ने ज्ञान में जो पद देखा, उस पद के बारे में भगवान भी नहीं बता सके। क्योंकि वहाँ पर वाणी नहीं है। वाणी कुछ हद तक ही, कुछ हद तक ही वाणी है। फिर उससे आगे वाणी का योग निकल जाता है। क्योंकि वाणी स्थूल है और वह सूक्ष्मतम है। अतः स्थूल, सूक्ष्मतम का वर्णन नहीं कर सकती। वाणी यदि सूक्ष्मतम हो तभी वर्णन कर पाएगी। और ऐसी वाणी होती नहीं। अतः कृपालुदेव ने लिखा है न कि..

'जे पद श्री सर्वज्ञे दीतुं ज्ञानमां,
कही शक्या नहीं पण ते श्री भगवान जो।

तेह स्वरूप ने अन्य वाणी ते शुं कहे?
अनुभवगोचर मात्र रह्युं ते ज्ञान जो।

अपूर्व अवसर...'

(जिस पद को श्री सर्वज्ञ(भगवान) ने ज्ञान में देखा, लेकिन श्री भगवान भी जिसके बारे में नहीं बता पाए। उस स्वरूप के बारे में अन्य वाणी क्या बता पाएगी, वह ज्ञान तो मात्र अनुभवोचर है)

वह बताया जा सके ऐसा नहीं है, अनुभवोचर है। अतः नरसिंह मेहता ने कहा था कि, 'शास्त्र ज्ञान से निबेड़ा नहीं है, अनुभवज्ञान से निबेड़ा है।'

(सूत्र-21)

आप 'हमारी' 'पाँच आज्ञा' में रहो, वही पुरुषार्थ है, वही धर्म है! अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं है। उसमें सबकुछ आ गया।

पुरुषार्थ किसे कहते हैं? जितनी जागृति रहे और जितना हमारी आज्ञा पालन किया जाए, उसे। और यदि पुरुषार्थ हुआ तो अंदर केवलज्ञान के अंश बढ़ते जाएँगे। केवलज्ञान के अंश बढ़ते-बढ़ते जब 360 डिग्री हो जाएगा तब केवलज्ञान पूर्ण हो जाएगा! तब तक अंश केवलज्ञान कहा जाएगा। अंश केवलज्ञान है, खुद को ऐसा पता चल जाता है कि मुझे अंश केवलज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञाता-द्रष्टा स्टेज में रह सकते हैं। इस ज्ञाता-द्रष्टा में रहने का जो प्रयत्न करते हैं, वह पुरुषार्थ कहलाता है या पराक्रम कहलाता है?

दादाश्री : वह पुरुषार्थ कहलाता है। पुरुष बना इसलिए पुरुषार्थ धर्म है। पुरुषार्थ धर्म अर्थात् क्या? ज्ञाता-द्रष्टा को ही पुरुषार्थ धर्म कहते हैं। पुरुष बना तो पुरुषार्थ धर्म होना ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : क्या पराक्रम में जागृति रहनी चाहिए?

दादाश्री : बहुत ही अधिक जागृति। पराक्रम

में तो ज़बरदस्त जागृति रहनी चाहिए। पराक्रम तो पराक्रम कहलाता है। लोग भी कहें कि, 'ये तो पराक्रमी व्यक्ति है?'

प्रश्नकर्ता : वैसी जागृति हो तभी पराक्रम होगा न?

दादाश्री : ज़बरदस्त जागृति हो तभी पराक्रम कहलाता है। इन पाँच आज्ञाओं पालन करते हैं, वह तो जागृति है। लेकिन कभी कभी यों डोज़िंग हो जाता है इस तरह झोंका खा जाता है, उसे मंद जागृति कहते हैं। आपको जो जागृति दी है, वह इतनी अधिक जागृति दी है न, कि बात मत पूछो!

अनुभव, लक्ष और प्रतीति तो सभी को रहते हैं। वह कोई पुरुषार्थ का फल नहीं है। वह तो 'दादाई' कृपा का फल है। अब पुरुषार्थ और पराक्रम कब कहलाएगा? जिससे आप लटके हो वह लटकाने वाली डोरी टूट जाए तब! अब, पराक्रम आपको करना है। यह तो आपको जो प्राप्त हो गया है, वह आपके पुण्य के आधार पर ज्ञानी की कृपा प्राप्त हुई और कृपा के आधार पर यह प्राप्त हुआ है!

अब खुद का स्वयंसुख उत्पन्न हुआ है, अब आपको अन्य किसी सुख के अवलंबन की ज़रूरत नहीं है। इसलिए उन सुखों को एक ओर रख देना। यह सुख और वह सुख दोनों एक साथ उत्पन्न नहीं होते। इसलिए *अटकण* (जो बंधनरूप हो जाए, आगे नहीं बढ़ने दे) को ढूँढ निकालो।

प्रश्नकर्ता : पुरुषार्थ से, पराक्रम से *अटकण* का *निकाल* (निपटारा) हो सकता है न?

दादाश्री : हाँ, सबकुछ हो सकता है। इसीलिए तो हम चेतावनी देते हैं कि जहाँ पर आत्मा प्राप्त हुआ, जहाँ पर पुरुष बने हो, पुरुषार्थ

है, पराक्रम किया जा सके वैसे है, तो अब काम निकाल लो। फिर से अटकना जोखिम वाला है, वहाँ पर हल निकाल लो!

प्रश्नकर्ता : पराक्रम का अर्थ समझाइए।

दादाश्री : दादा की पाँच आज्ञाओं में रहना, उसे तो पुरुषार्थ कहते हैं। लेकिन पराक्रम अर्थात् यदि चंदूभाई नरम हो जाए या उग्र हो जाए तो हमें उनसे प्रतिक्रमण करवाना है, इस प्रकार सब करना है। और फिर से ऐसा न हो, ऐसी जागृति रखनी है। फिर भी यदि हो जाए तो फिर से पराक्रम में वही की वही गलती नहीं होनी चाहिए। ज़रा सा कमज़ोर पड़ जाता है। पराक्रम अर्थात् सभी प्रकार से सेफसाइड कर लेना। आज्ञा तो कुछ ही हद तक काम करती है, बाकी काम तो पराक्रम करता है।

(सूत्र-22)

अपनी सेफसाइड रहे, उस तरह चलते ही रहना है। आपको तो सिर्फ जागृति ही रखनी है। अपना यह विज्ञान ऐसा है कि थोड़े समय में सेफसाइड करवा दे। जिसे भगवान भी न पूछ सकें, ऐसी सेफसाइड करवा दे, ऐसा है यह विज्ञान!

प्रश्नकर्ता : दादा, यह जो जागृति है उसकी सेफसाइड किस प्रकार रख सकते हैं?

दादाश्री : यह तो, मैंने सेफसाइड के सारे धर्म बता दिए, सारे गुणधर्म बता दिए कि कॉमनसेन्स, प्रताप, सौम्यता, गंभीरता व स्थिरता आनी चाहिए। ये सारे गुण होने चाहिए न! इन गुणों के बिना जागृति उत्पन्न हो गई है, अतः इसके लिए एक ही सेफसाइड है कि इसका यदि त्याग का उदय आया तो बहुत अच्छी सेफसाइड कही

जाएगी। तब तो बेस्ट कही जाएगी। पूरी सेफसाइड ही हो गई। क्योंकि वीतरागों का काम! वीतरागों का काम ऐसा है कि जिसने प्रवेश किया उसकी सेफसाइड। उनकी खोज है, यह। जिसने प्रवेश किया उसकी सेफसाइड, फिर चाहे समझ हो या न हो, तब भी। और यह तो जागृति कहलाती है। किसी प्रकार की परेशानी नहीं रही न! संसार को याद नहीं करना पड़ेगा। उन्हें कुछ उपयोग देने का रहा ही नहीं न, कहाँ से भोजन लाएँगे या क्या करेंगे? किसका टैक्स भरेंगे, फलाना भरेंगे, नौकरी पर से जब रुपये लाते हैं तब भी गिनने पड़ते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : गिनने ही पड़ते हैं न!

दादाश्री : क्या? तो उस समय जागृति का क्या करता होगा वह? गिनते समय जागृति का क्या करता है? तू रुपये गिनते समय क्या करता है जागृति का?

प्रश्नकर्ता : अरे! घर वाले तीन बार पूछते हैं। घर वाले पूछते हैं, 'पैसें गिने थे क्या?' तो फिर अब, नहीं गिने हों तो भी कहना तो पड़ेगा न कि, 'भाई नहीं गिने', तो फिर चिल्लाएँगे। इसलिए गिन लेते हैं एक बार।

दादाश्री : जागृति वाले को तो रुपये गिनने में भी परेशानी हो जाती है, क्या?

हमें कभी कोई एक-एक रुपये वाला सौ का बंडल दे न, तो अगर वह सतानवें दे फिर भी हम समझ जाते हैं कि, 'चलो न, तीन में हिसाब निपट गया न!' हम जागृति वाले, हमें यह गिनना पुसाएगा कैसे? लक्ष्मी गिनना, वह कैसे पुसाएगा? यानी हम जानते हैं कि दो या तीन कम होंगे, चलो न!

(सूत्र-23)

ऊपर से 'एटम बम' गिरे फिर भी बिल्कुल असर नहीं होना चाहिए। 'एटम बम' गिरेगा तो वह 'ए.एम.पटेल' पर गिरेगा, क्या 'मुझ' पर गिरेगा? ऐसा है, यह अपना विज्ञान! 'अक्रम विज्ञान' है!

यह तो अद्भुत ज्ञान दिया है। रात को जब जागो तब हाज़िर हो जाता है कि, 'मैं शुद्धात्मा हूँ।' आप जहाँ कहोगे वहाँ हाज़िर हो जाएगा और बहुत परेशानी आ जाए न, तो निरंतर जाग्रत रहेगा। बहुत बड़ी मुश्किल आए और उससे भी ज़्यादा मुश्किलें आएँ, बम गिरने लगे तब तो फिर गुफा में ही घुस जाएगा, केवलज्ञानी जैसी दशा हो जाएगी! बाहर बम गिरना चाहिए तो केवलज्ञानी जैसी दशा हो जाएगी, ऐसा ज्ञान दिया है।

कृपालुदेव ने लिखा है, आरंभ-परिग्रह न छोटे तो श्रुतज्ञान किस प्रकार से होगा और अवधिज्ञान भी कब हो पाएगा? और आत्मज्ञान कब होगा?

जबकि आप सभी महात्मा तो आरंभ-परिग्रह के अंदर खेल रहे हैं और केवलज्ञान के नज़दीक हैं। केवलज्ञान हो चुका है लेकिन यह पचा नहीं है।

आरंभ और परिग्रह दोनों परिनिवर्त्ये हो गया (मैं, मेरा और कर्ता छूट गया) अर्थात् इससे केवलज्ञान के कारण का सेवन हो रहा है, अपने महात्माओं में। यह कोई ऐसी-वैसी बात नहीं है, यह तो अद्भुत चीज़ है! लेकिन अब बच्चे के हाथ में यह हीरा आ गया है।

कृपालुदेव ने कहा है, कि 'आत्मा तो ज्ञानी के हृदय में है।' किताबों में स्थूल आत्मा है। वह स्थूल आत्मा काम नहीं आएगा, सूक्ष्मतर आत्मा की आवश्यकता है। जिसे केवलज्ञान कहा जाता है, उसकी आवश्यकता है। उस सूक्ष्मतर तक तो पहुँचना चाहिए न? 'हम' सूक्ष्मतर तक पहुँच चुके हैं। ऐसा है, यह विज्ञान! अब सूक्ष्मतर में जाना बाकी है।

- जय सच्चिदानंद

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication** : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication** : Monthly
3. **Name of Printer** : Amba Offset, **Nationality** : Indian,
Address : B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.
4. **Name of Publisher** : Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality** : Indian,
Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor** : Dimple Mehta, **Nationality** : Indian, **Address** : same as above. (As per No.4)
6. **Name of Owner** : Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality** : Indian,
Address : same as above. (As per No.4)

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2021

sd/-

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

शुद्ध उपयोग का अभ्यास

स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद आपको क्या करना है ?

आपको अब उपयोग रखना है। अभी तक आत्मा का 'डायरेक्ट' शुद्ध उपयोग था ही नहीं। प्रकृति जैसे नचाती थी, वैसे आप नाचते थे, और फिर कहते हो कि 'मैं नाचा! मैंने यह दान किया, मैंने ऐसा किया, वैसा किया, इतनी सेवा की!' अब आपको आत्मा प्राप्त हो गया, इसलिए आपको उपयोग में रहना है। अब आप पुरुष बने हैं और आपकी प्रकृति जुदा हो गई है। प्रकृति अपना काम किए बिना रहेगी नहीं, वह छोड़ेगी नहीं। और आपको, पुरुष को, पुरुषार्थ में रहना है यानी कि पुरुष को पुरुषार्थ करना है। 'ज्ञानीपुरुष' ने आज्ञा दी है, उसमें रहना है। उपयोग में रहना है।

उपयोग अर्थात् क्या? यों बाहर निकले और यों गधे जा रहे हों, कुत्ते जा रहे हों, बिल्ली जा रही हो और हम देखें नहीं और ऐसे ही चलते रहें, तो अपना उपयोग बेकार गया कहा जाएगा। उसमें तो उपयोग रखकर उसमें आत्मा देखते-देखते जाएँ तो वह शुद्ध उपयोग कहलाएगा। ऐसा शुद्ध उपयोग यदि कोई एक घंटा रखे तो उसे इन्द्र का अवतार मिलेगा, इतनी अधिक क्रीमती वस्तु है यह!

प्रश्नकर्ता : शुद्ध उपयोग व्यवहार में, व्यवसाय में रह सकता है क्या ?

दादाश्री : व्यवहार का और शुद्ध उपयोग का लेना-देना नहीं है। व्यापार कर रहे हों या और कुछ भी करते हों, लेकिन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने के बाद, स्वयं पुरुष होने के बाद शुद्ध उपयोग रह सकता है। स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति से पहले किसी को शुद्ध उपयोग नहीं रह सकता। अब आप शुद्ध उपयोग रख सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी गधे को हम परमात्मा की तरह देखें, परमात्मा मानें तो...

दादाश्री : नहीं, नहीं। परमात्मा नहीं मानना है, परमात्मा तो भीतर बैठे हैं वे परमात्मा हैं और बाहर बैठा है, वह गधा है। उस गधे के ऊपर बोरी रखकर और भीतरवाले परमात्मा को देखकर चलना है।

पत्नी में परमात्मा देखकर व्यवहार करना। वर्ना पत्नी से विवाह किया है, तो क्या संन्यासी बन जाएँ? ये जवान लड़के क्या संन्यासी बन जाएँ? नहीं, नहीं, संन्यासी नहीं बनना है। भीतर भगवान देखो। भगवान क्या कहते हैं? 'मेरे दर्शन करो। मुझे और कोई पीड़ा नहीं है। मुझे कोई हर्ज नहीं है। व्यवहार, व्यवहार में बरतता है, उसमें आप मुझे देखो, शुद्ध उपयोग रखो।'

प्रश्नकर्ता : पैकिंग को पीड़ा होती है, उसका क्या ?

दादाश्री : वह पीड़ा किसी को भी नहीं होती। गधे पर बोरियाँ रखो, फिर भी उसे पीड़ा नहीं होती और नहीं रखो, तब भी पीड़ा नहीं होती। गधे को तो हम बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं। हम कांट्रेक्टर का व्यवसाय करते हैं, इसलिए हमारे यहाँ दो सौ-दो सौ गधे काम करने आते हैं। ऐसे-ऐसे कान गिरा देते हैं, तब हम समझ जाते हैं कि इतना अधिक वजन उठाया है, फिर भी वह अपनी मस्ती में ही है! उसकी मस्ती वह जाने। आपको क्या पता चले वह!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

2 से 5 अप्रैल - UK के महात्माओं के साथ ओनलाइन शिविर

21 से 25 अप्रैल - PMHT (पेरेंट्स महात्मा) शिविर

नोट : इस शिविर के रजिस्ट्रेशन संबंधी जानकारी कुछ दिनों में Akonnect मोबाइल एप द्वारा दी जाएगी।

1 मई - सत्संग तथा 2 मई - ज्ञानविधि (गुजराती भाषा में)

9 मई - पूज्यश्री के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम

14 से 16 मई - जर्मन के महात्माओं के साथ ओनलाइन शिविर

हिन्दी शिविर - वर्ष 2021

2 से 6 जून - सत्संग शिविर - 5 जून - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर हिन्दी भाषी मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी भाषा में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। इस शिविर के रजिस्ट्रेशन संबंधी जानकारी कुछ दिनों में Akonnect मोबाइल एप द्वारा दी जाएगी। जब रजिस्ट्रेशन शुरू हो, तब निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से नजदीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं और यदि आपके नजदीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 9924348880 पर (सुबह 9-30 से 1 और दोपहर 3 से 6) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

मुंबई-त्रिमंदिर : 9323528901	रायपुर : 9329523737	जलगाँव : 9420942944
दिल्ली : 9810098564	गाज़ियाबाद : 9968738972	पूणे : 7218473468
जलंधर : 9814063043	भिलाई : 9407982704	नासिक : 9325074635
चंदीगढ़ : 9780732237	इन्दौर : 6354602400	हैद्राबाद : 9885058771
हरियाणा : 9896871690	भोपाल : 9826926444	बंगलूर : 9590979099
वाराणसी : 9795228541	जबलपुर : 9425160428	हुबली : 9513216111
जयपुर : 8890357990	औरंगाबाद : 8308008897	चेन्नई : 7200740000
पटना : 7352723132	अमरावती : 9422915064	उड़ीसा : 8763073111
कोलकता : 9830093230	नागपुर : 9970059233	बेलगाम : 9738840212

‘दादावाणी’ के वार्षिक/15 साल के सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के अंतिम छः अंक की जांच करें। DGFT555/08-28 यानी आपकी सदस्यता अगस्त-2028 को समाप्त हो रही है। दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरों के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687. अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) : (079) 27540408, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बेंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820
यु.एस.ए.-कैनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706



पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर



भारत

- 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज सुबह 7-30 से 8-30 (फिल से शुरू)
- 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज रात 9 से 10 (फिल से शुरू)
- 'अरिहंत' चैनल पर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- 'वालम' पर रोज 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) (फिल से शुरू)
- 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर रोज सुबह 8-30 से 9-55 (हिन्दी में) (फिल से शुरू)
- 'साधना' पर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)- नया-कार्यक्रम
- 'उड़ीसा प्लस' टी.वी. पर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में-केवल उड़ीसा राज्य में)
- 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में) (फिल से शुरू)
- 'आस्था कन्नड़ा' पर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में) (नया)

USA - Canada

- 'TV Asia' पर रोज सुबह 7-30 से 8 EST
- 'Rishtey' पर रोज सुबह 7 से 7-30 और 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

UK

- 'वीनस' टी.वी. पर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- 'वीनस' टी.वी. पर रोज सुबह 8-30 से 9 GMT
- 'MA TV' पर रोज शाम 5-30 से 6-30 GMT
- 'Rishtey' पर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30 am GMT)

Australia

- 'Rishtey' पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- 'Rishtey-Asia' पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- 'आस्था ग्लोबल' पर सोम से शुक रात 10 से 10-30 IST
(डिश टी.वी. चैनल UK -849, USA-719) (गुजराती और हिन्दी में)

मार्च 2021
वर्ष-16 अंक-5
अखंड क्रमांक - 185

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

पराई सीट छोड़कर खुद की शुद्धात्मा की सीट पर बैठो

जिस कुर्सी पर तू बैठेगा, वहाँ पर यदि कोई दुःख महसूस न हो, तब समझना कि यह कुर्सी अपनी है। वेदना वाले भाग पर कोई बैठेगा ही नहीं न! किसी कुर्सी पर ज़रा सा दुःख हो, किसी कुर्सी पर ज़्यादा दुःख हो, किसी कुर्सी पर शॉक लगे... अंदर ऐसी चार-पाँच कुर्सियाँ हैं, तो वहाँ से उठ जाना चाहिए इट से। इस तरह से समझाया उसे। फिर बैठ भी जाता था लेकिन मैं फिर से उठा देता था। तो आपको शुद्धात्मा की कुर्सी पर बैठ जाना है। अतः स्वभाव को पहचानो। जहाँ शॉक लगता है, वहाँ पर बैठते हो और फिर शोर मचाते हो, 'दादा, मुझे अंदर कुछ हो रहा है...' 'अरे भाई! तू उठ न यहाँ से! वहाँ पर तेरी कुर्सी पर बैठ न! तुझ में रिलेटिव और रियल के विभाग बना दिए हैं कि यह तेरी कुर्सी और यह उसकी कुर्सी!'

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation -
Owner. Printed at Armba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.